ऋग्वेदः संहिता

प्रथम अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता प्रथम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	1	1	ॐ अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञ	1	1	16	स॒मो॒हे वा॒ य आश॑त॒ नर॑स्तो॒कस	1	1	31	इ॒मे सोमा॑स॒ इन्द॑वः सु॒तासो॒	1	2	9	वरु॑णः प्रावि॒ता भु॑वन्मि॒त्रो
1	1	2	यद॒ङ्ग दा॒शुषे॒ त्वमग्ने॑ भ॒द्	1	1	17	इन्द्रेहि॒ मत्स्यन्ध॑सो॒ विश्व	1	1	32	इन्द्रा॒वरु॑णयोर॒हं स॒ंराजो॒रव	1	2	10	जय॑तामिव तन्य॒तुर्म॒रुता॑मेति
1	1	3	वाय॒वा या॑हि दर्शते॒मे सोमा॒ अ	1	1	18	अ॒स्मान्त्सु तत्र॑ चोद॒येन्द्र	1	1	33	तयो॒रिदव॑सा व॒यं स॒नेम॒ नि च॑	1	2	11	अ॒म्बयो॑ य॒न्त्यध्व॑भिर्जा॒मयो
1	1	4	वाय॒विन्द्र॑श्च सुन्व॒त आ या॑त	1	1	19	गाय॑न्ति त्वा गाय॒त्रिणोऽर्च॑न	1	1	34	सो॒मान॒ं स्वर॑णं कृणु॒हि ब्र॑ह	1	2	12	आप॑ः पृणी॒त भेष॒जं वरू॑थं त॒न
1	1	5	अश्वि॑ना॒ यज्व॑री॒रिषो॒ द्रव॑त	1	1	20	सु॒वि॒वृतं॑ सुनि॒रज॒मिन्द्र॒ त	1	1	35	सद॑स॒स्पति॒मद्भु॑तं प्रि॒यमिन्	1	2	13	कस्य॑ नू॒नं क॑त॒मस्या॒मृता॑नां
1	1	6	ओमा॑सश्चर्षणीधृतो॒ विश्वे॑ देव	1	1	21	इन्द्र॒ं विश्वा॑ अवीवृधन्त्समु	1	1	36	प्रति॒ त्यं चारु॑मध्व॒रं गो॑पी	1	2	14	न॒हि ते॑ क्ष॒त्रं न सहो॒ न म॒न
1	1	7	सु॒रू॒प॒कृ॒त्नुमू॒तये॑ सु॒दुघा	1	1	22	अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे॒ होता॑र	1	1	37	ये नाक॒स्याधि॑ रोच॒ने दि॒वि दे	1	2	15	तत्त्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द
1	1	8	उ॒त नः॑ सु॒भगाँ॑ अ॒रिर्वो॒चेयु	1	1	23	क॒विम॒ग्निमुप॑स्तुहि स॒त्यध॑र्	1	2	1	अ॒यं दे॒वाय॒ जन्म॑ने॒ स्तोमो॒	1	2	16	यच्चि॒द्धि ते॒ विशो॑ यथा॒ प्र
1	1	9	आ त्वेता॒ निषी॑द॒तेन्द्र॑म॒भि	1	1	24	सुस॑मिद्धो न॒ आव॑ह दे॒वाँ अ॑ग्	1	2	2	उ॒त त्यं च॑म॒सं नव॒ं त्वष्टु॑र	1	2	17	तदित्स॑मा॒नमा॑शाते॒ वेन॑न्ता॒
1	1	10	त्वं सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ स॒द्यो व	1	1	25	नक्तो॒षासा॑ सु॒पेश॑सा॒ऽस्मिन्य	1	2	3	इ॒हेन्द्रा॒ग्नी उप॑ ह्वये॒ तयो	1	2	18	अतो॒ विश्वा॒न्यद्भु॑ता चिकि॒त्
1	1	11	यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चरं॑	1	1	26	ऐभि॑रग्ने॒ दुवो॒ गिरो॒ विश्वे॑	1	2	4	प्रा॒त॒र्युजा॒ विबो॑धया॒श्विना	1	2	19	परा॑ मे यन्ति धी॒तयो॒ गावो॒ न
1	1	12	दे॒व॒यन्तो॒ यथा॑ म॒तिमच्छा॑ वि	1	1	27	तान्यज॑त्राँ ऋता॒वृधोऽग्ने॒ पत	1	2	5	अ॒पां नपा॑त॒मव॑से सवि॒तार॒मुप॑	1	2	20	वसि॑ष्वा॒ हि मि॑येध्य॒ वस्त्रा
1	1	13	इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्	1	1	28	इन्द्र॒ सोम॒ं पिब॑ ऋ॒तुना त्वा	1	2	6	अ॒भि नो॑ दे॒वीरव॑सा म॒हः शर्म॑	1	2	21	यच्चि॒द्धि शश्व॑ता॒ तना॑ दे॒वं
1	1	14	स नो॑ वृषन्न॒मुं च॒रुं सत्रा॑द	1	1	29	द्र॒वि॒णो॒दा द्रवि॑णसो॒ ग्राव॑	1	2	7	अतो॑ दे॒वा अ॑वन्तु नो॒ यतो॒ वि	1	2	22	अश्व॒ं न त्वा॒ वार॑वन्तं व॒न्द
1	1	15	एन्द्र॑ सान॒सिं र॒यिं स॒जित्वा	1	1	30	आ त्वा॑ वहन्तु॒ हर॑यो॒ वृष॑ण॒ं	1	2	8	ती॒व्राः सोमा॑स॒ आ ग॑ह्या॒शीर्	1	2	23	वि॒भ॒क्तासि॑ चित्रभानो॒ सिन्धो

ऋग्वेदः संहिता प्रथम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	2	24	स नो॑ म॒हाँ अ॑निमा॒नो धू॒मके॑त	1	3	1	एताया॒मोपं॑ ग॒व्यन्त॒ इन्द्रं॑म॒	1	3	16	मो षु ण॒ः परा॑परा॒ निर्ऋ॑तिर्द	1	3	31	त्वमं॑ग्ने॒ वसूँ॑रि॒ह रु॒द्राँ
1	2	25	यत्र॒ ग्रावा॑ पृ॒थुबु॑ध्न ऊ॒र्	1	3	2	अयुं॑युत्सन्ननव॒द्यस्य॒ सेना॒मय	1	3	17	मरु॑तो वीळुपा॒णिभिं॑श्चि॒त्रा र	1	3	32	त्वां चिं॑त्रश्रवस्तम॒ हवं॑न्ते
1	2	26	उ॒त स्म॑ ते वनस्पते॒ वातो॒ विव	1	3	3	अनु॑ स्व॒धामं॑क्षर॒न्नापो॑ अ॒स्	1	3	18	प्र यदि॒त्था पं॑रा॒वतं॑ः शो॒चिर्	1	3	33	ए॒षो उ॒षा अपू॑र्व्या॒ व्यु॑च्छ
1	2	27	यच्चि॒द्धि स॑त्य सोमपा अनाश॒स्	1	3	4	त्रिश्चिं॑न्नो अ॒द्या भं॑वतं नवे	1	3	19	उपो॒ रथे॑षु॒ पृषं॑तीरयुग्ध्वं॒	1	3	34	या न॒ः पीपं॑रदश्विना॒ ज्योतिं॑ष्
1	2	28	आ व॒ इन्द्रं॒ क्रिविं॑ यथा वाज	1	3	5	त्रिर्नो॑ अश्विना यज॒ता दि॒वेद	1	3	20	उत्तिं॑ष्ठ ब्रह्मणस्पते देव॒यन्	1	3	35	अभूं॑दु पा॒रमेतं॑वे॒ पन्था॑ ऋ॒तस
1	2	29	ऊ॒र्ध्वस्तिं॑ष्ठा न ऊ॒तये॒ऽस्मि	1	3	6	ह्वया॑म्य॒ग्निं प्रं॑थ॒मं स्व॒स	1	3	21	तमिद्वो॑चेमा वि॒दथे॑षु शं॒भुवं	1	4	1	अ॒यं वा॒ं मधुं॑मत्तमः सु॒तः सोम
1	2	30	अ॒स्माकं॑ शि॒प्रिणी॑नां॒ सोमं॑प	1	3	7	वि सु॑प॒र्णो अ॒न्तरिं॑क्षाण्यख्	1	3	22	यं रक्षं॑न्ति॒ प्रचे॑तसो॒ वरु॑ण	1	4	2	सु॒दासे॑ दस्रा॒ वसु॒ बिभ्रं॑ता॒
1	2	31	शश्व॒दिन्द्र॒ः पोप्रु॑थद्भिर्ज	1	3	8	प्र वो॑ य॒ह्वं पु॑रू॒णां वि॒शा	1	3	23	स रत्नं॒ मर्त्यो॒ वसु॒ विश्वं॑	1	4	3	स॒ह वा॒मेनं॑ न उषो॒ व्यु॑च्छा द
1	2	32	त्वमं॑ग्ने प्रथ॒मो अङ्गि॑रा॒ ऋष	1	3	9	त्वे इदं॑ग्ने सु॒भगे॑ यविष्ठ्य॒	1	3	24	सं पू॑ष॒न्नध्वं॑नस्तिर॒ व्यंहो॑	1	4	4	वि या सृ॒जति॒ सम॑नं॒ व्य १॒ र्थ
1	2	33	त्वमं॑ग्ने वृजि॒नवं॑र्तनिं॒ नरं॒	1	3	10	यम॒ग्निं मेध्यां॑तिथि॒ः कण्वं॑ ई	1	3	25	अधा॑ नो विश्वसौभग॒ हिरं॑ण्यवाशी	1	4	5	उषो॒ वाजं॒ हि वंस्व॒ यश्चि॒त्र
1	2	34	त्वामं॑ग्ने प्रथ॒ममा॒युमा॒यवे॑	1	3	11	घ॒नेव॒ विष्व॒ग्वि ज॒ह्यरा॑व्ण॒	1	3	26	कद्रु॒द्राय॒ प्रचे॑तसे मी॒ळ्हु	1	4	6	उषो॑ भ॒द्रेभि॒रा गं॑हि दि॒वश्चि
1	2	35	इ॒मामं॑ग्ने श॒रणिं॑ मीमृषो न इ॒	1	3	12	क्री॒ळं व॒ः शर्धो॒ मारु॑तमन॒र्	1	3	27	शं न॑ः कर॒त्यर्व॑ते सु॒गं मे॒ष	1	4	7	उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं वं॑ह
1	2	36	इन्द्रं॑स्य॒ नु वी॒र्या॑णि॒ प्र	1	3	13	को वो॒ वर्षि॑ष्ठ॒ आ नं॑रो दि॒वश	1	3	28	अग्ने॒ विवं॑स्वदु॒षसं॑श्चि॒त्रं	1	4	8	येना॑ पावक॒ चक्षं॑सा भुर॒ण्यन्त
1	2	37	अ॒यो॒द्धेवं॑ दु॒र्मद॒ आ हि जु॒ह	1	3	14	त्यं चिं॑द्धा दी॒र्घं पृथुं मि	1	3	29	सु॒शंसो॑ बोधि गृण॒ते यं॑विष्ठ्य	1	4	9	अ॒भि त्यं मे॒षं पुं॑रुहू॒तमृ॒ग्
1	2	38	दा॒सप॑त्नी॒रहिं॑गोपा अतिष्ठ॒न्न	1	3	15	कद्धं नू॒नं कं॑धप्रियः पि॒ता पु	1	3	30	नि त्वा॑ य॒ज्ञस्य॒ साधं॑न॒मग्ने	1	4	10	त्वं कुत्सं॑ शुष्ण॒हत्ये॑ष्वाव

ऋग्वेदः संहिता प्रथम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	4	11	मन्दि॑ष्ट॒ यदु॒शने॑ का॒व्ये सच	1	4	26	वह्निं᳚ य॒शसं᳚ वि॒दथ॑स्य के॒तु	1	5	12	श्री॒णन्नुप॑ स्था॒द्दिवं᳚ भुर॒	1	5	27	हिर॑ण्यकेशो॒ रज॑सो विसा॒रेऽहि॒
1	4	12	त्यं सु मे॒षं म॑हया स्व॒र्विदं॑	1	4	27	अ॒स्मा इदु॒ प्र त॒वसे॑ तु॒राय॒	1	5	13	शु॒क्रः शु॑शु॒क्वाँ उ॒षो न जा॒	1	5	28	अवा॑ नो अग्न ऊ॒तिभि॑र्गाय॒त्रस
1	4	13	परीं᳚ घृ॒णा च॑रति तित्वि॒षे शव	1	4	28	अ॒स्मा इदु॒ त्वष्टा॑ तक्ष॒द्वज	1	5	14	व॒नेम॑ पू॒र्वीर॒र्यो म॑नी॒षा अ	1	5	29	इ॒त्था हि सोम॒ इन्मदे॑ ब्र॒ह्म
1	4	14	यदि॒न्न्विं॑न्द्र पृथि॒वी दश॑भुज	1	4	29	अ॒स्येदु॑ त्वे॒षसा॑ रन्त॒ सिन्	1	5	15	उप॒ प्र जि॑न्वन्नुश॒तीरु॒शन्तं॑	1	5	30	अधि॒ सानौ॒ नि जि॑घ्नते॒ वज्रे॑
1	4	15	न्यू॒ ३॒ षु वाचं॒ प्र म॒हे भ॑रा	1	5	1	प्र म॑न्महे शवसा॒नाय॑ शू॒षमा॑ङ्	1	5	16	स्व आ यस्तुभ्यं॒ दम॒ आ वि॒भाति	1	5	31	इ॒मे चि॒त्तव॑ म॒न्यवे॒ वेपे॑ते
1	4	16	ते त्वा॒ मदा॑ अमद॒न्तानि॒ वृष्	1	5	2	तदु॒ प्रय॑क्षतममस्य॒ कर्म᳚ द॒स	1	5	17	नि काव्या॑ वे॒धसः॒ शश्व॑तस्क॒र	1	6	1	इन्द्रो॒ मदा॑य वावृधे॒ शव॑से व
1	4	17	मा नो॑ अ॒स्मिन्म॑घवन्पृ॒त्स्वं	1	5	3	स॒ना॒युवो॒ नम॑सा॒ नव्यो॑ अ॒र्क	1	5	18	त्रिः स॒प्त यद्गुह्या॑नि॒ त्वे	1	6	2	यो अ॒र्यो म॑र्त॒भोज॑नं परा॒ददा
1	4	18	त्वमा॑विथ॒ नर्यं᳚ तु॒र्वशं॒ यद	1	5	4	त्वं म॒हाँ इ॑न्द्र॒ यो ह॒ शुष्	1	5	19	र॒यिर्न यः पि॑तृवि॒त्तो व॑यो॒ध	1	6	3	उपो॒ षु शृ॑णु॒ही गिरो॒ मघ॑व॒न्
1	4	19	दि॒वश्चिं॑दस्य वरि॒मा वि प॑प्रथ	1	5	5	त्वां ह॒ त्यदि॒न्द्रार्ण॑सातौ॒	1	5	20	ऋ॒तस्य॒ हि धे॒नवो॑ वावशा॒नाः स	1	6	4	अश्वा॑वति प्रथ॒मो गोषु॑ गच्छति
1	4	20	स हि श्र॑व॒स्युः सद॑नानि कृ॒त्	1	5	6	वृष्णे॒ शर्धा᳚य॒ सुम॑खाय वे॒धस	1	5	21	उ॒प॒प्र॒यन्तो॑ अध्व॒रं मन्त्रं॑	1	6	5	असा॑वि॒ सोम॑ इन्द्र ते॒ शवि॑ष्
1	4	21	ए॒ष प्र पू॒र्वीरव॒ तस्यं॑ च॒म्र	1	5	7	पिन्व॑न्त्य॒पो म॒रुतः॑ सु॒दान॑	1	5	22	आ च॒ वहा॑सि॒ ताँ इ॒ह दे॒वाँ उप	1	6	6	नकि॒ष्ट्वद्र॒थीत॑रो॒ हरी॒ यदि॑
1	4	22	प्र मंहि॑ष्ठाय बृह॒ते बृ॒हद्र॑	1	5	8	हि॒र॒ण्ययें᳚भिः प॒विभिः॑ पयो॒वृ	1	5	23	जु॒षस्व॑ स॒प्रथ॑स्तमं॒ वचो॑ दे	1	6	7	ता अ॑स्य पृशना॒युवः॒ सोमं᳚ श्र
1	4	23	नू चि॑त्सहो॒जा अ॒मृतो॒ नि तु॑न	1	5	9	प॒श्वा न ता॒युं गुहा॒ चत॑न्तं॒	1	5	24	का त॒ उपे॑ति॒र्मन॑सो॒ वरा॑य॒ भ	1	6	8	को अ॒द्य यु॑ङ्क्ते धु॒रि गा ऋ॒
1	4	24	द॒धुष्ट्वा॒ भृग॑वो॒ मानु॑षे॒ष्	1	5	10	र॒यिर्न चि॒त्रा सूरो॒ न सं॒दृग	1	5	25	क॒था दा॑शेमा॒ग्नये॒ कास्मै॑ दे	1	6	9	प्र ये शुम्भ॑न्ते॒ जन॑यो॒ न सप
1	4	25	व॒या इद॑ग्ने अ॒ग्नयं॑स्ते अ॒न्य	1	5	11	वने॑षु जा॒युर्मर्ते॑षु मि॒त्रो	1	5	26	अ॒भि त्वा॒ गोत॑मा गि॒रा जात॑वे	1	6	10	ते॑ऽवर्धन्त॒ स्वत॑वसो महित्व॒न

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	6	11	मरु॑तो॒ यस्य॒ हि क्षये॑ पा॒था
1	6	12	पू॒र्वाभि॒र्हि द॑दाशि॒म श॒रद्भ
1	6	13	प्रत्व॑क्षसः॒ प्रत॑वसो विर॒प्श
1	6	14	आ वि॒द्युन्म॑द्भिर्मरुतः स्व॒र
1	6	15	आ नो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यन्तु वि
1	6	16	स्व॒स्ति न॒ इन्द्रो॑ वृ॒द्धश्र
1	6	17	ऋ॒जु॒नी॒ती नो॒ वरु॑णो मि॒त्रो
1	6	18	मधु॒ वाता॑ ऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्
1	6	19	त्वं सो॑म॒ प्र चि॑कितो मनी॒षा
1	6	20	त्वं च॑ सोम नो॒ वशो॑ जी॒वातुं॒
1	6	21	सोम॑ गी॒र्भिष्ट्वा॑ व॒यं व॒र्ध
1	6	22	प्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑
1	6	23	अषा॑ळ्हं यु॒त्सु पृत॑नासु॒ पप्
1	6	24	ए॒ता उ॒ त्या उ॒षसः॑ के॒तुम॑क्र
1	6	25	अता॑रिष्म॒ तम॑सस्पा॒रम॒स्योषा

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	6	26	व्यू॒र्ण्व॒ती दि॒वो अन्ताँ॑ अब
1	6	27	अश्वि॑ना व॒र्तिर॒स्मदा गोम॑द्द
1	6	28	अग्नी॑षोमावि॒मं सु मे॑ शृणु॒तं
1	6	29	अग्नी॑षोमा ह॒विषः॒ प्रस्थि॑तस्
1	6	30	इ॒मं स्तोम॒मर्ह॑ते जा॒तवे॑दसे॒
1	6	31	त्वम॑ध्व॒र्युरु॒त होता॑सि पू॒र
1	6	32	अध॑ स्व॒नादु॒त बि॑भ्युः पत॒त्र
1	7	1	द्वे विरू॑पे चरतः॒ स्वर्थे॑ अ॒
1	7	2	उ॒भे भ॒द्रे जो॑षयेते॒ न मेने॒
1	7	3	स प्र॒त्नथा॒ सह॑सा॒ जाय॑मानः स
1	7	4	रा॒यो बु॒ध्नः स॒ंगम॑नो॒ वसू॑ना
1	7	5	अप॑ नः॒ शोशु॑चद॒घमग्ने॑ शु॒शु॒ग
1	7	6	वै॒श्वा॒न॒रस्य॑ सुम॒तौ स्या॑म॒
1	7	7	जा॒तवे॑दसे सुनवाम॒ सोम॑मरातीय॒
1	7	8	स यो वृषा॒ वृष्ण्ये॑भिः॒ समो॑क

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	7	9	स म॑न्यु॒मीः स॒मद॑नस्य क॒र्तास
1	7	10	स जा॒मिभि॒र्यत्स॒मजा॑ति मी॒ळ्ह
1	7	11	रो॒हिच्छ्या॒वा सु॒मदं॑शुर्ल॒ला॒
1	7	12	प्र म॒न्दिने॑ पितु॒मद॑र्चता॒ व
1	7	13	रु॒द्रणा॑मेति प्र॒दिशा॑ विचक्ष
1	7	14	इ॒मां ते॒ धियं॒ प्र भ॑रे म॒हो
1	7	15	गो॒जिता॑ बा॒हू अमि॑तक्रतुः सि॒
1	7	16	तत्त॑ इन्द्रि॒यं प॑र॒मं प॑रा॒च
1	7	17	भूरि॑कर्मणे वृष॒भाय॒ वृष्णे॑ स
1	7	18	योनि॑ष्ट इन्द्र नि॒षदे॑ अकारि॒
1	7	19	स त्वं न॑ इन्द्र॒ सूर्ये॒ सो अ
1	7	20	च॒न्द्रमा॑ अ॒प्स्व१॒॑न्तरा सु॑प॒
1	7	21	कद्व॑ ऋ॒तस्य॑ धर्ण॒सि कद्वरु॑ण
1	7	22	सु॒प॒र्णा ए॒त आ॑सते॒ मध्य॑ आ॒र
1	7	23	अ॒सौ यः पन्था॑ आदि॒त्यो दि॒वि

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	7	24	इन्द्रं॑ मि॒त्रं वरु॑णम॒ग्निमू॒
1	7	25	य॒ज्ञो दे॒वानां॒ प्रत्ये॑ति सु
1	7	26	य इ॑न्द्राग्नी चि॒त्रत॑मो॒ रथो
1	7	27	यदब्र॑वं प्रथ॒मं वां॑ वृणा॒नो॒३॒॑
1	7	28	वि ह्यख्यं॒ मन॑सा॒ वस्य॑ इ॒च्छ
1	7	29	प्र च॑र्ष॒णिभ्यः॑ पृतना॒हवे॑षु
1	7	30	त॒तं मे॒ अप॒स्तदु॑ तायते॒ पुनः
1	7	31	आ म॑नी॒षाम॒न्तरि॑क्षस्य॒ नृभ्य
1	7	32	तक्ष॒न्नथं॑ सु॒वृतं॑ विद्म॒नाप
1	7	33	ईळे॒ द्यावा॑पृथि॒वी पू॒र्वचि॑त
1	7	34	याभि॒रन्त॑कं॒ जस॑मान॒मार॑णे भु
1	7	35	याभिः॑ सुदानू औशि॒जाय॑ व॒णिजे॑
1	7	36	याभि॑र्नरा श॒यवे॒ याभि॒रत्र॑ये
1	7	37	याभिः॑ कृशानु॒मस॑ने दुव॒स्यथो
1	8	1	इ॒दं श्रेष्ठं॒ ज्योति॑षां॒ ज्य

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
1	8	2	क्ष॒त्राय॑ त्वं॒ श्रव॑से त्वं	1	8	17	यवं॒ वृके॑णाश्विना॒ वप॒न्तेषं᳚
1	8	3	ई॒युष्टे ये पूर्व॑तरा॒मप॑श्यन्	1	8	18	आ वां॒ रथो॑ अश्विना श्ये॒नप॑त्
1	8	4	उदी॑र्ध्वं जी॒वो असु॑र्न॒ आगा॒	1	8	19	उद्व॒न्दन॑मैरतं दं॒सना॑भि॒रुद्र
1	8	5	इ॒मा रु॒द्राय॑ त॒वसे॑ कप॒र्दिन	1	8	20	आ वां॒ रथं᳚ पुरुमा॒यं म॑नो॒जुव
1	8	6	इ॒दं पि॒त्रे म॒रुता॑मुच्यते॒ व	1	8	21	यु॒वं रे॒भं परि॑षूतेरुरुष्यथो
1	8	7	चि॒त्रं दे॒वाना॒मुद॑गा॒दनी॑कं॒	1	8	22	का रा॑ध॒द्धोत्रा॑श्विना वां॒ क
1	8	8	नास॑त्याभ्यां ब॒र्हिरि॑व॒ प्र	1	8	23	श्रु॒तं गा॑य॒त्रं तक॑वानस्या॒ह
1	8	9	यम॑श्विना द॒दथुः॑ श्वे॒तमश्वं॑म	1	8	24	कदि॒त्था नॄँः पात्रं᳚ देवय॒तां
1	8	10	तद्वां᳚ नरा॒ शंस्यं॒ राध्यं᳚ च	1	8	25	अध॒ प्र जंज्ञे त॒रणि॑र्ममत्तु॒
1	8	11	श॒तं मे॒षान्वृ॒क्ये॑ चक्षदा॒नम	1	8	26	अनु॑ त्वा म॒ही पाज॑सी अच॒क्रे
1	8	12	एक॑स्या॒ वस्तो॑रावतं॒ रणा॑य॒ व				
1	8	13	मध्वः॒ सोम॑स्याश्विना॒ मदा॑य प				
1	8	14	तद्वां᳚ नरा॒ शंस्यं᳚ पज्रि॒येण				
1	8	15	सू॒नोर्माने॑नाश्विना गृणा॒ना व				
1	8	16	अजो॑हवीदश्विना॒ वर्ति॑का वामा॒				

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

द्वितिय अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता द्वितिय अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	1	1	प्र व॒ः पान्त᳚ं रघुमन्य॒वोऽन्ध	2	1	16	यं त्वं रथ॑मिन्द्र मे॒धसा॑तयेऽ	2	2	5	वे॒दि॒षदे॑ प्रि॒यधा॑माय सु॒द्य	2	2	20	मि॒त्रं न यं शिम्या॒ गोषु॑ ग॒व
2	1	2	श्रु॒तं मे॑ मित्रावरुणा॒ हवे॒म	2	1	17	प्र तद्वो॑चेय॒ं भव्या॒येन्द॑वे	2	2	6	भूष॒न्न योऽधि॑ ब॒भ्रूषु॒ नम्न॑	2	2	21	आ वा॑मृ॒ताय॑ के॒शिनी॑रनूषत॒ मि
2	1	3	अध॒ ग्मन्ता॒ नहु॑षो॒ हव᳚ं सू॒र	2	1	18	एन्द्र॑ या॒ह्युप॑ नः पर॒ावतो॒	2	2	7	इ॒दम॑ग्ने॒ सुधि॑तं॒ दुर्धि᳚ता॒	2	2	22	यु॒वं वस्त्रा॑णि पीव॒सा व॑साथे
2	1	4	पृ॒थू रथो॒ दक्षि॑णाया अयो॒ज्यै	2	1	19	इ॒मां ते॒ वाच᳚ं वसू॒यन्त॑ आ॒यव	2	2	8	बळि॒त्था तद्वपु॑षे धायि दर्श॒त	2	2	23	यजा॑महे वां म॒हः स॒जोषा॑ ह॒व्य
2	1	5	उदी॑रतां सू॒नृता॒ उत्पुर᳚ंधी॒र	2	1	20	इन्द्रा॑य॒ हि द्यौरसु॑रो॒ अन॑म	2	2	9	आदिद्धोता॑रं वृणते॒ दिवि॑ष्टिष	2	2	24	विष्णो॒र्नु क᳚ं वी॒र्या॑णि॒ प्
2	1	6	सु॒सं॒का॒शा मा॒तृमृ॑ष्टेव॒ योष	2	1	21	त्वया॑ व॒यं म॑घव॒न्पूर्व्ये॒ ध	2	2	10	समि॑द्धो अग्न॒ आ व॑ह दे॒वाँ अ॒	2	2	25	प्र व॒ः पान्त॒मन्ध॑सो धियाय॒ते
2	1	7	उ॒षा उ॒च्छन्ती॑ समिधा॒ने अ॒ग्न	2	1	22	उ॒भे पु॑नामि॒ रोद॑सी ऋ॒तेन॒ द्	2	2	11	आ भन्द॑माने॒ उपा॑के॒ नक्तो॒षास	2	2	26	भवा॑ मि॒त्रो न शेव्यो॑ घृ॒तासु
2	1	8	ए॒वेदे॒षा पु॑रु॒तमा॑ दृ॒शे कं	2	1	23	आ त्वा॒ जुवो॑ रारहा॒णा अ॒भि प्	2	2	12	प्र तव्य॑सीं॒ नव्य॑सीं धी॒तिम॒	2	2	27	अबो॑ध्य॒ग्निर्ज्म उदे॑ति॒ सूर्
2	1	9	अवे॒यम॑श्वैद्युव॒तिः पु॒रस्ता॑	2	1	24	स्ती॒र्णं ब॒र्हिरुप॑ नो याहि व	2	2	13	एति॒ प्र होता॑ व्र॒तम॑स्य मा॒य	2	3	1	वसू॑ रु॒द्रा पु॑रु॒मन्तू॑ वृ॒ध
2	1	10	प्रा॒ता रत्न᳚ं प्रात॒रित्वा॑ द	2	1	25	इ॒मे वा॒ं सोमा॑ अ॒प्स्वा सु॒ता	2	2	14	तं पृ॑च्छता॒ स ज॑गामा॒ स वे॑द॒	2	3	2	प्र द्यावा॑ य॒ज्ञैः पृ॑थि॒वी ऋ
2	1	11	अम॑न्दा॒न्त्सोमा॒न्प्र भ॑रे मन	2	1	26	प्र सु ज्येष्ठ᳚ं निचि॒राभ्या᳚ं	2	2	15	त्रि॒मू॒र्धान᳚ं स॒प्तर॑श्मिं ग	2	3	3	ते हि द्यावा॑पृथि॒वी वि॒श्वश᳚ं
2	1	12	अ॒ग्निं होता॑रं मन्ये॒ दास्व॑न	2	2	1	सु॒षु॒मा या॑त॒मद्रि॑भि॒र्गोश्र	2	2	16	क॒था ते॑ अग्ने शु॒चय॑न्त आ॒योर	2	3	4	किमु॒ श्रेष्ठ॒ः किं यवि॑ष्ठो न
2	1	13	स हि शर्धो॒ न मारु॑तं तुवि॒ष्व	2	2	2	प्रप्र॑ पू॒ष्णस्तु॑विजा॒तस्य॑	2	2	17	मथी॒द्यदी᳚ं वि॒ष्टो मा॑त॒रिश्व	2	3	5	इन्द्रो॒ हरी॑ युयु॒जे अ॒श्विना
2	1	14	अ॒यं जा॑यत॒ मनु॑षो॒ धरी॑मणि॒ ह	2	2	3	अस्तु॒ श्रौष॑ट् पु॒रो अ॒ग्निं	2	2	18	म॒हः स रा॒य एष॑ते॒ पति॒र्दन्नि	2	3	6	उ॒द्वत्स्व॑स्मा अकृणोतना॒ तृणं
2	1	15	विश्वो॒ विहा॑या अर॒तिर्वसु॑र्द	2	2	4	वृष॑न्निन्द्र वृष॒पाणा॑स॒ इन्द	2	2	19	पु॒रु त्वा॑ दा॒श्वान्वो॑चे॒ऽरि	2	3	7	मा नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो अर्य॒माय

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	3	8	यू॒प॒व्र॒स्का उ॒त ये यू॑पवा॒हा
2	3	9	यत्ते॒ गात्रा॑द॒ग्निना॑ प॒च्यम
2	3	10	यदश्वा॑य॒ वास॑ उपस्तृ॒णन्त्य॑ध
2	3	11	यदक्र॑न्दः प्रथ॒मं जाय॑मान उ॒द
2	3	12	आ॒त्मानं॑ ते॒ मन॑सा॒राद॑जानाम्॒
2	3	13	तव॒ शरी॑रं पतयि॒ष्ण्व॑र्व॒न्तव
2	3	14	अ॒स्य वा॒मस्य॑ पलि॒तस्य॒ होतु॒
2	3	15	अचि॑कित्वाञ्चिकि॒तुष॑श्चि॒दत्र
2	3	16	द्वाद॑शारं न॒हि तज्जरा॑य॒ वर्व
2	3	17	स्त्रियः॑ स॒तीस्ताँ उ॑ मे पुं॒
2	3	18	यत्रा॑ सुप॒र्णा अ॒मृत॑स्य भा॒ग
2	3	19	उप॑ ह्वये सु॒दुघा॑ धे॒नुमे॒ता
2	3	20	अप॑श्यं गो॒पामनि॑पद्यमान॒मा च॒
2	3	21	स॒प्तार्ध॑ग॒र्भा भुव॑नस्य॒ रेत
2	3	22	गौ॒रीर्मि॑माय सलि॒लानि॒ तक्ष॒त

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	3	23	कृ॒ष्णं नि॒यानं॒ हर॑यः सुप॒र्ण
2	3	24	कया॑ शु॒भा सव॑यसः॒ सनी॑ळाः समा
2	3	25	क्व१॒ स्या वो॑ मरुतः स्व॒धासी॒द
2	3	26	अम॑न्दन्मा मरु॒तः स्तोमो॒ अत्र
2	4	1	तन्नु वो॑चाम रभ॒साय॒ जन्म॑ने॒
2	4	2	यू॒यं न॑ उग्रा मरुतः सुचे॒तुना
2	4	3	म॒हान्तो॑ म॒ह्ना वि॒भ्वो॒३॒ विभ
2	4	4	स॒हस्रं॑ त इन्द्रो॒तयो॑ नः स॒ह
2	4	5	आस्था॑पयन्त युव॒तिं युवा॑नः शु
2	4	6	य॒ज्ञाय॑ज्ञा वः सम॒ना तु॑तु॒र्
2	4	7	क्व॑ स्विद॒स्य रज॑सो म॒हस्परं॒
2	4	8	म॒हश्चि॒त्त्वमि॑न्द्र य॒त ए॒ता
2	4	9	प्रति॒ प्र या॑हीन्द्र मी॒ळ्हुष
2	4	10	न नू॒नमस्ति॒ नो श्वः कस्तद्वे॑
2	4	11	प्रति॑ व ए॒ना नम॑सा॒हमे॑मि सू॒

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	4	12	चि॒त्रो वो॑ऽस्तु याम॑श्चि॒त्र
2	4	13	गाय॒त्साम॑ नभ॒न्यं१॒ यथा॒ वेरर्
2	4	14	प्र यदि॒त्था म॑हि॒ना नृभ्यो॒ अ
2	4	15	य॒ज्ञो हि ष्मेन्द्रं॒ कश्चि॑दृ
2	4	16	त्वं रा॑जेन्द्र॒ ये च॑ दे॒वा र
2	4	17	ज॒घ॒न्वाँ इ॑न्द्र मि॒त्रेरू॑ञ्
2	4	18	मत्स्यपा॑यि ते॒ मह॒ः पात्र॑स्य
2	4	19	मत्सि॑ नो॒ वस्य॑इष्टय॒ इन्द्र॑
2	4	20	आ च॑र्षणि॒प्रा वृ॑ष॒भो जना॑नां
2	4	21	यद्ध॒ स्या त॑ इन्द्र श्रु॒ष्टि
2	4	22	पू॒र्वीर॒हं श॒रद॑ः शश्रमा॒णा द
2	4	23	यु॒वो रजां॑सि सु॒यमा॑सो॒ अश्वा
2	4	24	नि यद्यु॒वेथे॑ नि॒युत॑ः सुदानू॒
2	4	25	कदु॒ प्रेष्ठा॑वि॒षां र॑यी॒णाम॑
2	4	26	प्र वां॑ श॒रद्वा॑न्वृष॒भो न नि

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	4	27	अभू॑दि॒दं व॒युन॒मो षु भू॑षता॒
2	4	28	अव॑विद्धं तौ॒ग्र्यम॒प्स्व१॒न्तर
2	4	29	तं यु॑ञ्जाथा॒ं मन॑सो॒ यो जवी॑य
2	5	1	ता वा॑म॒द्य ताव॑प॒रं हु॑वेमो॒च
2	5	2	क॒त॒रा पूर्वा॑ कत॒राप॑रा॒योः क
2	5	3	उ॒र्वी सद्म॑नी बृह॒ती ऋ॒तेन॑ ह
2	5	4	आ न॒ इळा॑भिर्वि॒दथे॑ सुश॒स्ति
2	5	5	उ॒त न॑ ई॒ं त्वष्टा ग॒न्त्वच्छा
2	5	6	पि॒तुं नु स्तो॑षं म॒हो ध॒र्माण
2	5	7	त्वे पि॑तो म॒हाना॑ं दे॒वाना॒ं
2	5	8	समि॑द्धो अ॒द्य रा॑जसि दे॒वो दे
2	5	9	सु॒रु॒क्मे हि सु॒पेश॒साधि॑ श्र
2	5	10	अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्म
2	5	11	वि घ॒ त्वावाँ॑ ऋतजात यंसद्गृणा
2	5	12	अ॒न॒र्वाणं॑ वृष॒भं म॒न्द्रजि॑ह

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	5	13	सु॒प्रै॒तु॑ः सू॒यव॑सो॒ न पन्था॑	2	5	28	श्रेष्ठं॑ यविष्ठ भार॒ताग्ने॑ द	2	6	14	अध्व॑र्यवो॒ यः श॒तमा स॒हस्र॒ं	2	6	29	ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे
2	5	14	कङ्क॑तो॒ न कङ्क॒तोऽथो॑ सती॒नक॑	2	5	29	वा॒ज॒यन्नि॑व॒ नू रथा॒न्योगाँ॑	2	6	15	प्र घा॒ न्व॑स्य मह॒तो म॒हानि॑	2	6	30	त्वं नो॑ गो॒पाः प॑थि॒कृद्वि॑चक
2	5	15	द्यौर्व॑ः पि॒ता पृ॑थि॒वी मा॒ता	2	6	1	नि होता॑ होतृ॒षद॑ने॒ विदा॑नस्त	2	6	16	सोद॑ञ्चं॒ सिन्धु॑मरिणान्महि॒त्	2	6	31	अ॒ना॒नु॒दो वृ॑ष॒भो जग्मि॑राह॒व
2	5	16	इ॒य॒त्ति॒का श॑कुन्ति॒का स॒का ज	2	6	2	जो॒हूत्रो॑ अ॒ग्निः प्र॑थ॒मः पि	2	6	17	प्र वः॑ स॒तां ज्येष्ठ॑तमाय सुष	2	6	32	मा न॑ः स्ते॒नेभ्यो॒ ये अ॒भि द्
2	5	17	त्वम॑ग्ने॒ द्युभि॒स्त्वमा॑शुशु	2	6	3	श्रु॒धी हव॑मिन्द्र॒ मा रि॑षण्य	2	6	18	वृषा॑ ते॒ वज्र॑ उ॒त ते॒ वृषा॒	2	7	1	सेमाम॑विड्ढि प्रभृ॑ति॒ं य ईशि
2	5	18	त्वम॑ग्ने रु॒द्रो असु॑रो म॒हो	2	6	4	स्तवा॒ नु त॑ इन्द्र पू॒र्व्या	2	6	19	तद॑स्मै॒ नव्य॑मङ्गिर॒स्वद॑र्चत	2	7	2	अ॒भि॒नक्ष॑न्तो अ॒भि ये तमा॑न॒श
2	5	19	त्वम॑ग्ने॒ अदि॑तिर्देव दा॒शुषे	2	6	5	पिबा॑पि॒बेदि॑न्द्र शू॒र सोम॒ं	2	6	20	सास्मा॒ अरं॑ बा॒हुभ्यां॒ यं पि	2	7	3	योऽव॑रे वृ॒जने॑ वि॒श्वथा॑ वि॒भ
2	5	20	य॒ज्ञेन॑ वर्धत जा॒तवे॑दसम॒ग्निं	2	6	6	बृ॒हन्त॒ इन्नु ये ते॑ तरुत्रो॒	2	6	21	प्रा॒ता रथो॒ नवो॑ योजि॒ सस्नि॒	2	7	4	इन्धा॑नो अ॒ग्निं व॑नवद्वनुष्य॒
2	5	21	स नो॑ रे॒वत्स॑मिधा॒नः स्व॒स्तय	2	6	7	यो जा॒त ए॒व प्र॑थ॒मो मन॑स्वान्	2	6	22	आशी॒त्या न॑व॒त्या या॑ह्य॒र्वाङ	2	7	5	ऋ॒जुरिच्छंसो॑ वनवद्वनुष्य॒तो द
2	5	22	समि॑द्धो अ॒ग्निर्निहि॑तः पृथि॒	2	6	8	यो र॒ध्रस्य॑ चोदि॒ता यः कृ॒शस्	2	6	23	अपा॑य्य॒स्यान्ध॑सो॒ मदा॑य॒ मनी	2	7	6	इ॒मा गिर॑ आदि॒त्येभ्यो॑ घृ॒तस्
2	5	23	सा॒ध्वपां॑सि स॒नता॑ न उक्षि॒ते	2	6	9	यः शम्ब॑रं॒ पर्व॑तेषु क्षि॒यन्	2	6	24	स र॑न्धयत्स॒दिव॒ः सार॑थये॒ शुष	2	7	7	सु॒गो हि वो॑ अर्यमन्मित्र॒ पन्
2	5	24	हु॒वे व॑ः सु॒द्योत्मा॑नं सुवृ॒	2	6	10	ऋ॒तुर्जनि॑त्री॒ तस्या॑ अ॒पस्पर	2	6	25	व॒यं ते॒ वय॑ इन्द्र वि॒द्धि षु	2	7	8	न द॑क्षि॒णा वि चि॑किते॒ न स॒व्
2	5	25	आ यो वना॑ तातृषा॒णो न भाति॒ वा	2	6	11	यो भोज॑नं च॒ दय॑से च॒ वर्ध॑नमा	2	6	26	स ह॑ श्रु॒त इन्द्रो॒ नाम॑ दे॒व	2	7	9	इ॒दं क॒वेरा॑दि॒त्यस्य॑ स्व॒राज
2	5	26	होता॑जनिष्ट॒ चेत॑नः पि॒ता पि॒त	2	6	12	सु॒प्र॒वा॒च॒नं तव॑ वीर वी॒र्यं॑	2	6	27	वि॒श्व॒जिते॑ धन॒जिते॑ स्व॒र्जि	2	7	10	अपो॒ सु म्य॑क्ष वरुण भि॒यस॒ं म
2	5	27	इ॒मां मे॑ अग्ने स॒मिध॑मि॒मामु॑	2	6	13	अध्व॑र्यवो॒ भर॒तेन्द्रा॑य॒ सोम	2	6	28	त्रिक॑द्रुकेषु महि॒षो यवा॑शिरं	2	7	11	धृत॑व्रता॒ आदि॑त्या॒ इषि॑रा आ॒

ऋग्वेदः संहिता द्वितिय अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	7	12	ऋ॒तं दे॒वाय॑ कृण्व॒ते स॑वि॒त्र
2	7	13	प्र हि क्रतु॑ं वृ॒हथो॒ यं व॑नु
2	7	14	अ॒स्माक॑ मित्रावरुणावत॒ं रथ॑म
2	7	15	अ॒स्य मे॑ द्यावापृथिवी ऋताय॒तो
2	7	16	आ ते॑ पितर्मरुतां सु॒म्नमे॑तु
2	7	17	उन्मा॑ ममन्द वृ॒ष॒भो म॒रु॒त्वा॒न
2	7	18	स्तु॒हि श्रु॒तं ग॑र्त॒सद॒ं युव
2	7	19	धा॒रा॒व॒रा म॒रुतो॑ धृ॒ष्ण्वो॑ज
2	7	20	आ नो॒ ब्रह्मा॑णि मरुतः समन्यवो
2	7	21	तान्वो॑ म॒हो म॒रुत॑ एव॒याव्नो॒
2	7	22	उपे॑मसृक्षि वा॒ज॒युर्व॑च॒स्यां
2	7	23	अ॒श्व॒स्या॒त्र जनि॑मा॒स्य च॒ स॒
2	7	24	तद॒स्यानी॑कमु॒त चारु॒ नामा॑पी॒
2	7	25	तु॒भ्यं॑ हिन्वा॒नो व॑सिष्ट गा
2	8	1	मन्द॑स्व होत्रादनु॒ जोष॒मन्ध॒

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	8	2	उदु॒ ष्य दे॒वः स॑वि॒ता स॒वाय॑
2	8	3	स॒मावव॑र्ति॒ विष्ठि॑तो जिगी॒षु
2	8	4	ग्रावा॑णेव॒ तदिदर्थं॑ जरेथे॒ ग
2	8	5	ओष्ठा॑विव॒ मध्वा॒स्ने वद॑न्ता॒
2	8	6	सोमा॑पूषणा॒ जन॑ना रयी॒णां जन॑न
2	8	7	वायो॒ ये ते॑ सह॒स्रिणो॒ रथा॑स॒
2	8	8	ता स॒म्राजा॑ घृ॒तासु॑ती आदि॒त्
2	8	9	इन्द्र॑श्च मृ॒ळ्या॑ति नो॒ न नः
2	8	10	अम्बि॑तमे॒ नदी॑तमे॒ देवि॑तमे॒
2	8	11	कनि॑क्रदज्ज॒नुषं॑ प्रब्रु॒वा॒ण
2	8	12	प्र॒द॒क्षि॒णिद॒भि गृ॑णन्ति का॒
2	8	13	सोम॑स्य मा त॒वस॒ं वक्ष्य॑ग्ने॒
2	8	14	व॒व्राजा॑ सी॒मन॑दती॒रद॑ब्धा दि
2	8	15	उ॒रौ म॒हाँ अ॑निबा॒धे व॑व॒र्धाप
2	8	16	उ॒प॒क्षे॒तार॒स्तव॑ सु॒प्रणी॒तेऽ

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
2	8	17	वै॒श्वा॒न॒राय॑ धि॒षणा॑मृता॒वृध
2	8	18	पाव॑कशोचे॒ तव॒ हि क्षय॒ं परि॒
2	8	19	स जि॑न्वते ज॒ठरे॑षु प्रजज्ञि॒व
2	8	20	वै॒श्वा॒न॒राय॑ पृथु॒पाज॑से॒ वि
2	8	21	अ॒ग्निर्दे॒वेभि॒र्मनु॑षश्च ज॒न
2	8	22	स॒मित्स॑मित्सु॒मना॑ बोध्य॒स्मे
2	8	23	आ भन्द॑माने उ॒षसा॒ उपा॑के उ॒त
2	8	24	प्रत्य॒ग्निरु॒षस॒श्चेकि॑ता॒नोऽ
2	8	25	ऋ॒भुश्च॑क्र ईड्य॒ं चारु॒ नाम॒
2	8	26	प्र का॑रवो मन॒ना व॒च्यमा॑ना दे
2	8	27	ऋ॒तस्य॑ वा के॒शिना॑ यो॒ग्याभि॑

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

तृतीय अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता तृतीय अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
3	1	1	प्र य आ॒रुः शिति॑पृ॒ष्ठस्य॑ धा
3	1	2	उ॒तो पि॒तृभ्यां॑ प्र॒विदा॒नु घ
3	1	3	अ॒ञ्जन्ति॒ त्वाम॑ध्व॒रे दे॑व॒य
3	1	4	यान्वो॒ नरो॑ देव॒यन्तो॑ निमि॒म
3	1	5	सखा॑यस्त्वा ववृमहे दे॒वं मर्ता॑
3	1	6	तं त्वा॒ मर्ता॑ अगृभ्णत दे॒वेभ
3	1	7	त्वाम॑ग्ने मनी॒षिणः॑ स॒म्राजं॑
3	1	8	अ॒ग्निं व॑र्धन्तु नो॒ गिरो॒ यत
3	1	9	अ॒ग्निर्होता॑ पु॒रोहि॑तोऽध्व॒र
3	1	10	सा॒ह्वान्विश्वा॑ अभि॒युजः॒ क्र
3	1	11	इन्द्रा॑ग्नी॒ आ ग॑तं सु॒तं गी॒
3	1	12	इन्द्रा॑ग्नी नव॒तिं पुरो॑ दा॒स
3	1	13	प्र वो॑ दे॒वाया॒ग्नये॒ बर्हि॑ष
3	1	14	आ होता॑ म॒न्द्रो वि॒दथा॑न्यस्थ
3	1	15	वि पाज॑सा पृ॒थुना॒ शोशु॑चानो॒
3	1	16	अ॒यम॒ग्निः सु॒वीर्य॒स्येशे॑ म॒
3	1	17	स॒मि॒ध्यमा॑नः प्रथ॒मानु॒ धर्मा
3	1	18	भवा॑ नो अग्ने सु॒मना॒ उपे॑तौ॒
3	1	19	अ॒ग्निं होता॑रं॒ प्र वृ॑णे मि॒
3	1	20	अ॒ग्निमु॒षस॑म॒श्विना॑ दधि॒क्रा
3	1	21	इ॒मं नो॑ य॒ज्ञम॒मृते॑षु धेही॒म
3	1	22	अ॒यं सो अ॒ग्निर्यस्मि॒न्त्सोम॒
3	1	23	निर्म॑थितः॒ सुधि॑त॒ आ स॒धस्थे॒
3	1	24	अग्ने॒ सह॑स्व॒ पृत॑ना अ॒भिमा॑त
3	1	25	अग्ने॑ दि॒वः सू॒नुर॑सि॒ प्रचे॑
3	1	26	वै॒श्वा॒न॒रं मन॑सा॒ग्निं नि॒चा
3	1	27	व्रातं॑व्रातं ग॒णंग॑णं सुश॒स्त
3	1	28	प्र वो॒ वाजा॑ अ॒भिद्य॑वो ह॒विष
3	1	29	तं स॒बाधो॑ य॒तस्रु॑च इ॒त्था धि
3	1	30	अ॒ग्निं य॒न्तुर॑म॒प्तुर॑मृ॒तस्
3	1	31	अग्ने॑ जु॒षस्व॑ नो ह॒विः पुरो॑
3	1	32	अस्ती॒दम॑धि॒मन्थ॑न॒मस्ति॑ प्र॒
3	1	33	यदी॒ मन्थ॑न्ति बा॒हुभि॒र्वि रो
3	1	34	तनू॒नपा॑दुच्यते॒ गर्भ॑ आसु॒रो
3	2	1	इ॒च्छन्ति॑ त्वा सो॒म्यासः॒ सखा
3	2	2	प्र सू॒ त॑ इन्द्र प्र॒वता॒ हरिं॑
3	2	3	एको॒ द्वे वसु॑मती समी॒ची इन्द्
3	2	4	सं घोषः॑ शृण्वेऽव॒मैर॒मित्रै॑र
3	2	5	शास॒द्वह्नि॑र्दुहि॒तुर्न॒प्त्य
3	2	6	वि॒दद्यदी॑ स॒रमा॑ रु॒ग्णमद्रे॒
3	2	7	स जा॒तेभि॑र्वृत्र॒हा सेदु॑ ह॒व
3	2	8	अ॒पश्चि॑दे॒ष वि॒भ्वो॒३॒ दमू॑नाः
3	2	9	इन्द्र॒ सोम॑ सोमपते॒ पिबे॒मं
3	2	10	त्वम॒पो यद्ध॑ वृ॒त्रं ज॑घ॒न्वा
3	2	11	अह॒न्नहिं॑ परि॒शया॑न॒मर्ण॑ ओजा
3	2	12	प्र पर्व॑तानामुश॒ती उ॒पस्था॒दश
3	2	13	इन्द्रो॑ अ॒स्माँ अ॑रद॒द्वज्र॑ब
3	2	14	यद॒ङ्ग त्वा॑ भर॒ताः सं॒तरे॑युर
3	2	15	इन्द्रः॑ पू॒र्भिदाति॑र॒द्दास॑म
3	2	16	म॒हो म॒हानि॑ पनयन्त्य॒स्येन्द्
3	2	17	तिष्ठा॒ हरी॒ रथ॒ आ यु॒ज्यमा॑ना
3	2	18	तवा॒यं सोम॒स्त्वमेह्य॒र्वाङ् श
3	2	19	इ॒मामू॒ षु प्रभृ॑तिं सा॒तये॑ ध
3	2	20	प्र यत्सिन्ध॑वः प्रस॒वं यथाय॒न
3	2	21	वार्त्र॑हत्याय॒ शव॑से पृतना॒षा
3	2	22	वाजे॑षु सास॒हिर्भ॑व॒ त्वामी॑मह
3	2	23	अ॒भि तष्टे॑व दीधया मनी॒षामत्यो
3	2	24	त्रीणि॑ राजाना वि॒दथे॑ पु॒रूणि
3	2	25	इन्द्र॑ म॒तिर्हृ॒द आ व॒च्यमा॒
3	2	26	इन्द्रो॒ मधु॒ संभृ॑तमु॒स्रिया॑

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
3	3	1	इन्द्रं॑ त्वा वृष॒भं व॒यं सु॒ते	3	3	16	तुभ्यं॒ ब्रह्मा॑णि॒ गिर॑ इन्द्र	3	3	31	आ धे॒नवो॑ धुनयन्ता॒मशि॑श्वीः स	3	4	15	ते म॑न्वत प्रथ॒मं नाम॑ धे॒नोस्
3	3	2	गिर्व॑णः पा॒हि नः॑ सु॒तं मधो॒र	3	3	17	धा॒नाव॑न्तं कर॒म्भिण॑मपू॒पव॑न्	3	4	1	न ता मि॑नन्ति मा॒यिनो॒ न धीरा॑	3	4	16	यो मर्त्ये॑ष्व॒मृत॑ ऋ॒तावा॑ दे
3	3	3	आ तू न॑ इन्द्र म॒द्र्य॑ग्घुवा॒	3	3	18	तृ॒तीये॑ धा॒नाः सव॑ने पुरुष्टु	3	4	2	प्र मे॑ विवि॒क्वाँ अ॑विदन्मनी॒	3	4	17	यस्त॑ इ॒ध्मं ज॒भर॑त्सिष्विदा॒न
3	3	4	स म॑न्दस्वा॒ ह्यन्ध॑सो॒ राध॑से	3	3	19	इन्द्रा॑पर्वता बृह॒ता रथे॑न वा	3	4	3	धे॒नुः प्र॒त्नस्य॒ काम्यं॒ दुह	3	4	18	चित्ति॒मचि॑त्तिं चिनव॒द्वि वि॒
3	3	5	उप॑ नः सु॒तमा ग॑हि॒ सोम॑मिन्द्	3	3	20	अपा॒ः सोम॒मस्त॑मिन्द्र॒ प्र या	3	4	4	पु॒रा॒णमोक॑ः स॒ख्यं शि॒वं वा॑	3	4	19	अधा॒ यथा॑ नः पि॒तर॒ः परा॑सः प्
3	3	6	वि॒द्मा हि त्वा॑ धनंज॒यं वाजे॑	3	3	21	उप॒ प्रेत॑ कुशिकाश्चे॒तय॑ध्व॒म	3	4	5	मि॒त्रो जना॑न्यातयति ब्रुवा॒णो	3	4	20	आ वो॒ राजा॑नमध्व॒रस्य॑ रु॒द्रं
3	3	7	आ या॑ह्य॒र्वाङुप॑ वन्धुरे॒ष्ठा	3	3	22	स॒स॒र्प॒रीर॑भर॒त्तूय॑मे॒भ्योऽध	3	4	6	मि॒त्रस्य॑ चर्षणी॒धृतोऽवो॑ दे॒	3	4	21	कद्धिष्ण्या॑सु वृधसा॒नो अ॑ग्ने
3	3	8	अ॒यं ते॑ अस्तु हर्य॒तः सोम॒ आ	3	3	23	इन्द्रो॒तिभि॑र्बहु॒लाभि॑र्नो अ	3	4	7	इ॒हेह॑ वो॒ मन॑सा ब॒न्धुता॑ नर	3	4	22	ऋ॒तेनाद्रिं॒ व्य॑सन्भि॒दन्त॒ः
3	3	9	आ म॒न्द्रैरि॑न्द्र॒ हरि॑भिर्या	3	3	24	इ॒मं म॒हे वि॑द॒थ्या॑य शू॒षं शश	3	4	8	उषो॒ वाजे॑न वाजिनि॒ प्रचे॑ता॒ः	3	4	23	कृ॒णु॒ष्व पाज॒ः प्रसि॑तिं॒ न प
3	3	10	यु॒ध्मस्य॑ ते वृष॒भस्य॑ स्व॒रा	3	3	25	क॒विर्नृ॒चक्षा॑ अ॒भि षी॑मचष्ट	3	4	9	इ॒मा उ॑ वां भृ॒मयो॒ मन्य॑माना	3	4	24	स ते॑ जानाति सुम॒तिं य॑विष्ठ॒
3	3	11	म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र वृष॒भो रणा॑य	3	3	26	हि॒र॑ण्यपाणिः सवि॒ता सु॑जि॒ह्व	3	4	10	वृ॒ष॒भं च॑र्षणी॒नां वि॒श्वरू॑प	3	4	25	म॒हो रु॑जामि ब॒न्धुता॒ वचो॑भि॒
3	3	12	स॒द्यो ह॑ जा॒तो वृ॑ष॒भः क॒नीनः	3	3	27	नास॑त्या मे पि॒तरा॑ बन्धु॒पृच्	3	4	11	दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्व॒यं वा॑ज॒यन्	3	5	1	वै॒श्वा॒न॒राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ स॒जो
3	3	13	शंसा॑ म॒हामिन्द्रं॒ यस्मि॒न्वि	3	3	28	उ॒षस॒ः पूर्वा॒ अध॒ यद्व्यू॒षुर	3	4	12	त्वां ह्य॑ग्ने॒ सद॒मित्स॑म॒न्य	3	5	2	इ॒दं मे॑ अग्ने॒ किय॑ते पाव॒काम
3	3	14	इन्द्र॒ः स्वाहा॑ पिबतु॒ यस्य॒	3	3	29	श॒युः प॒रस्ता॒दध॒ नु द्विमा॒त	3	4	13	अ॒स्य श्रेष्ठा॑ सु॒भग॑स्य सं॒द	3	5	3	ऋ॒तं वो॑चे॒ नम॑सा पृ॒च्छ्यमा॑न
3	3	15	च॒र्ष॒णी॒धृत॑ म॒घवा॑नमु॒क्थ्य	3	3	30	नाना॑ चक्राते य॒म्या॒३ वपूं॑षि	3	4	14	स जा॑यत प्रथ॒मः प॒स्त्या॑सु म॒	3	5	4	ऊ॒र्ध्व ऊ॒ षु णो॑ अध्वरस्य होत

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
3	5	5	भ॒द्रा ते॑ अग्ने स्वनीक सं॒दृग	3	5	20	तमिद्व॒ इन्द्रं᳚ सु॒हवं᳚ हुवेम
3	5	6	अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि	3	5	21	त्वं म॒हाँ इ॑न्द्र॒ तुभ्यं᳚ ह॒
3	5	7	तं शश्व॑तीषु मा॒तृषु॒ वन॒ आ वी	3	5	22	स॒त्रा सोमा॑ अभवन्नस्य॒ विश्वे
3	5	8	दू॒तं वो॑ वि॒श्ववे॑दसं हव्य॒वा	3	5	23	समिन्द्रो॒ गा अ॑जय॒त्सं हिर॑ण्
3	5	9	अग्ने॑ मृ॒ळ म॒हाँ अ॑सि॒ य ई॒मा	3	5	24	ग॒व्यन्त॒ इन्द्रं᳚ स॒ख्याय॒ वि
3	5	10	अग्ने॒ तम॒द्याश्वं॒ न स्तोमैः॒	3	5	25	अ॒यं पन्था॒ अनु॑वित्तः पुरा॒णो
3	5	11	भ॒द्रं ते॑ अग्ने सहसि॒न्ननी॑कम	3	5	26	ए॒ता अ॑र्षन्त्यलला॒भव॑न्तीर्ऋ॒
3	5	12	यस्त्वाम॑ग्न इ॒नध॑ते य॒तस्रु॒क	3	6	1	ए॒वा त्वामि॑न्द्र वज्रि॒न्नत्र
3	5	13	प्रत्य॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्यद्व	3	6	2	त्वं म॒हीम॒वनिं॑ वि॒श्वधे॑नां
3	5	14	प्रत्य॒ग्निरु॒षसो॑ जा॒तवे॑दा॒	3	6	3	आ न॒ इन्द्रो॑ दू॒रादा न॑ आ॒साद
3	5	15	अ॒ग्निर्होता॑ नो अध्व॒रे वा॒जी	3	6	4	गि॒रिर्न यः स्वत॑वाँ ऋ॒ष्व इन्
3	5	16	तमर्व॑न्तं॒ न सा॑न॒सिम॑रु॒षं न	3	6	5	आ या॒त्विन्द्रोऽव॑स॒ उप॑ न इ॒ह
3	5	17	आ स॒त्यो या॑तु म॒घवाँ॑ ऋजी॒षी	3	6	6	धि॒षा यदि॑ धिष॒ण्यन्तः॑ सर॒ण्य
3	5	18	विश्वा॑नि श॒क्रो नर्या॑णि वि॒द	3	6	7	यन्न॒ इन्द्रो॑ जुजु॒षे यच्च॒ व
3	5	19	यासि॒ कुत्से॑न स॒रथ॑मव॒स्युस्त	3	6	8	ता तू ते॑ स॒त्या तु॑विनृम्ण॒ व

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
3	6	9	क॒था म॒हाम॑वृध॒त्कस्य॒ होतु॑र्	3	6	24	कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒द
3	6	10	किमाद॑मत्रं स॒ख्यं सखि॑भ्यः क॒	3	6	25	सं यत्त॑ इन्द्र म॒न्यवः॒ सं च॒
3	6	11	का सु॑ष्टु॒तिः शव॑सः सू॒नुमिन्	3	6	26	अ॒स्माँ इ॒हा वृ॑णीष्व स॒ख्याय॑
3	6	12	कृ॒णोत्य॑स्मै॒ वरि॑वो॒ य इ॒त्थ	3	6	27	आ तू न॑ इन्द्र वृत्रहन्न॒स्माक
3	6	13	को अ॒द्य नर्यो॑ दे॒वका॑म उ॒शन्	3	6	28	भू॒यामो॒ षु त्वाव॑तः॒ सखा॑य इन
3	6	14	सु॒प्रा॒व्यः॑ प्राशु॒षाळे॒ष वी	3	6	29	ता ते॑ गृणन्ति वे॒धसो॒ यानि॑ च
3	6	15	अ॒हं मनु॑रभवं॒ सूर्य॑श्चा॒हं क	3	6	30	स॒हस्रं॒ व्यती॑नां यु॒क्ताना॒म
3	6	16	गर्भे॒ नु सन्नन्वे॑षामवेदम॒हं	3	7	1	प्र ऋ॒भुभ्यो॑ दू॒तमि॑व॒ वाच॑मि
3	6	17	त्वा यु॒जा तव॒ तत्सो॑म स॒ख्य इ	3	7	2	स॒त्यमू॑चु॒र्नर॑ ए॒वा हि च॒क्र
3	6	18	आ नः॑ स्तु॒त उप॒ वाजे॑भिरू॒ती	3	7	3	ऋ॒भुर्विभ्वा॒ वाज॒ इन्द्रो॑ नो
3	6	19	नकि॑रिन्द्र॒ त्वदुत्त॑रो॒ न ज्	3	7	4	आ न॑पातः शवसो यात॒नोपे॒मं य॒ज्
3	6	20	यत्रो॒त मर्त्या॑य॒ कमरि॑णा इन्	3	7	5	इ॒होप॑ यात शवसो नपातः॒ सौध॑न्व
3	6	21	ए॒तद॑स्या॒ अनः॑ शये॒ सुसं᳚पिष्	3	7	6	यो वः॑ सु॒नोत्य॑भिपि॒त्वे अह्ना
3	6	22	उ॒त त्यं पु॒त्रम॒ग्रुवः॒ परा॑व	3	7	7	अ॒न॒श्वो जा॒तो अ॑नभी॒शुरु॒क्थ्
3	6	23	अस्वा॑पयद्द॒भीत॑ये स॒हस्रा॑ त्	3	7	8	स वा॒ज्यर्वा॒ स ऋषि॑र्वच॒स्यया

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
3	7	9	उप॑ नो वाजा अध्व॒रमृ॑भुक्षा॒ द
3	7	10	सेद॑भवो॒ यमव॑थ यू॒यमिन्द्र॑श्
3	7	11	उ॒तो हि वां॑ दा॒त्रा सन्ति॒ पू
3	7	12	उ॒त स्मा॑सु प्रथ॒मः स॑रि॒ष्यन्
3	7	13	आ॒शुं द॑धि॒क्रां तमु॒ नु ष्ट॑व
3	7	14	द॒धि॒क्राव्ण॒ इदु॒ नु च॑र्किरा
3	7	15	इन्द्रा॒ को वां॑ वरुणा सु॒म्नम
3	7	16	तो॒के हि॒ते तन॑य उ॒र्वरा॑सु॒ स
3	7	17	मम॑ द्वि॒ता रा॒ष्ट्रं क्ष॒त्रि
3	7	18	अ॒हं ता विश्वा॑ चकरं॒ नकि॑र्मा
3	7	19	क उ॑ श्रवत्कत॒मो य॒ज्ञिया॑नां
3	7	20	तं वां॒ रथं॑ व॒यम॒द्या हु॑वेम
3	7	21	ए॒ष स्य भा॒नुरुदि॑यर्ति यु॒ज्य
3	7	22	अग्रं॑ पिबा॒ मधू॑नां सु॒तं वा॑
3	7	23	वायो॑ शु॒क्रो अ॑यामि ते॒ मध्वो
3	7	24	वि॒हि होत्रा॒ अवी॑ता॒ विपो॒ न
3	7	25	इ॒दं वा॑मा॒स्ये॑ ह॒विः प्रि॒यम
3	8	26	यस्त॒स्तम्भ॒ सह॑सा॒ वि ज्मो अन
3	8	27	ए॒वा पि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष
3	8	1	इ॒दमु॒ त्यत्पु॑रु॒तमं॑ पु॒रस्त
3	8	2	क्व॑ स्विदासां कत॒मा पु॑रा॒णी
3	8	3	प्रति॒ ष्या सू॒नरी॒ जनी॑ व्यु॒
3	8	4	तद्दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्वार्यं॑ म॒
3	8	5	अभू॑द्दे॒वः स॑वि॒ता वन्द्यो॒ न
3	8	6	को व॑स्त्रा॒ता व॑सव॒ः को व॑रू॒
3	8	7	नू रो॑दसी॒ अहि॑ना बु॒ध्न्ये॑न
3	8	8	म॒ही द्यावा॑पृथि॒वी इ॒ह ज्येष्
3	8	9	क्षेत्र॑स्य॒ पति॑ना व॒यं हि॒ते
3	8	10	स॒मु॒द्रादू॒र्मिर्मधु॑माँ॒ उदा
3	8	11	स॒म्यक्स्र॑वन्ति स॒रितो॒ न धेन
3	8	12	अबो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒
3	8	13	प्र णु त्यं विप्र॑मध्व॒रेषु॑ स
3	8	14	कु॒मा॒रं मा॒ता यु॑व॒तिः समु॑ब्
3	8	15	शुन॑श्चि॒च्छेपं॒ निदि॑तं स॒हस्
3	8	16	त्वम॑ग्ने॒ वरु॑णो॒ जाय॑से॒ यत्
3	8	17	यो न॒ आगो॑ अ॒भ्येनो॒ भरा॒त्यधी
3	8	18	त्वाम॑ग्ने॒ वसु॑पतिं॒ वसू॑नाम॒
3	8	19	व॒धेन॒ दस्युं॒ प्र हि चा॒तय॑स्
3	8	20	सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तं ती॒
3	8	21	सु॒प्रती॑के वयो॒वृधा॑ य॒ह्वी ऋ
3	8	22	अ॒ग्निं तं म॑न्ये॒ यो वसु॒रस्त
3	8	23	प्रो त्ये अ॒ग्नयो॒ऽग्निषु॒ विश
3	8	24	सखा॑य॒ः सं व॑ः स॒म्यञ्च॒मिषं॒
3	8	25	यं मर्त्य॑ः पुरु॒स्पृहं॑ वि॒दद
3	8	26	त्वाम॑ग्न ऋ॒ताय॑वः समी॑धिरे प्

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

चतुर्थ अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता चतुर्थ अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	1	1	त्वाम॑ग्ने ह॒विष्म॑न्तो दे॒वं	4	1	16	अग्ने॒ त्वं नो॒ अन्त॑म उ॒त त्र	4	1	31	सू॒र॑श्चि॒द्रथं॒ परि॑तक्म्यायां	4	2	13	को नु वां॑ मित्रावरुणावृता॒यन्
4	1	2	अग्न॒ ओजि॑ष्ठ॒मा भ॑र द्यु॒म्नम	4	1	17	अच्छा॑ वो अ॒ग्निमव॑से दे॒वं गा	4	1	32	अद॑र्द॒रुत्स॒मसृ॑जो॒ वि खानि॒	4	2	14	प्र वो॑ वा॒युं रथ॒युजं॑ कृणुध
4	1	3	जन॑स्य गो॒पा अ॑जनिष्ट॒ जागृ॑वि	4	1	18	अ॒ग्निर्द॑दाति॒ सत्प॑तिं सा॒सा	4	1	33	उद्यदिन्द्रो॑ मह॒ते दा॑न॒वाय॒	4	2	15	क॒था म॒हे रु॒द्रिया॑य ब्रवाम॒
4	1	4	प्राग्नये॑ बृह॒ते य॒ज्ञिया॑य ऋ	4	1	19	अग्ने॑ पावक रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया	4	1	1	महि॑ म॒हे त॒वसे॑ दीध्ये॒ नॄनिन	4	2	16	क॒था दा॑शेम॒ नम॑सा सु॒दानू॑नेव
4	1	5	अर्च॑न्तस्त्वा हवाम॒हेऽर्च॑न्त	4	1	20	स॒मि॒धा॒नः स॑हस्रजि॒दग्ने॒ धर्	4	2	2	प॒पृ॒क्षेण्य॑मिन्द्र॒ त्वे ह्य	4	2	17	प्र शंत॑मा॒ वरु॑णं॒ दीधि॑ती॒ ग
4	1	6	अ॒ग्निं स्तोमे॑न बोधय समिधा॒नो	4	1	21	अन॑स्वन्ता॒ सत्प॑तिर्मामहे मे॒	4	2	3	अजा॑तशत्रु॒मज॒रा॒ स्वर्व॒त्यनु	4	2	18	म॒रुत्व॑न्तो॒ अप्र॑तीतस्य जि॒ष्ण
4	1	7	प्र वे॒धसे॑ क॒वये॒ वेद्या॑य॒ ग	4	1	22	समि॑द्धो अ॒ग्निर्दि॒वि शो॒चिर॑	4	2	4	वि॒त्वक्ष॑णः॒ समृ॑तौ चक्रमास॒ज	4	2	19	तमु ष्टुहि यः स्वि॒षुः सु॒धन्व
4	1	8	बृ॒हद्वयो॒ हि भा॒नवेऽर्चा॑ दे॒	4	1	23	त्र्य॑र्य॒मा मनु॑षो दे॒वता॑ता॒	4	2	5	यस्ते॒ साधि॒ष्ठोऽव॑स॒ इन्द्र॒	4	2	20	आ धे॒नव॒ः पय॑सा॒ तूर्ण्य॑र्था॒
4	1	9	आ य॒ज्ञैर्दे॑व॒ मर्त्य॑ इ॒त्था	4	1	24	नव॒ यद॑स्य नव॒तिं च॑ भो॒गान्	4	2	6	त्वामि॒द्वृ॑त्रहन्तम॒ जना॑सो वृ	4	2	21	आ नो॑ म॒ही॒म॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्न
4	1	10	प्रा॒त॒र॒ग्निः पु॑रुप्रि॒यो वि॒	4	1	25	स्तोमा॑सस्त्वा॒ गौरि॑वीतेरवर्ध	4	2	7	स आ ग॑म॒दिन्द्रो॒ यो वसू॑नां॒	4	2	22	आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः पर्व॑ता॒दा
4	1	11	अ॒भ्य॑व॒स्थाः प्र जा॑यन्ते॒ प्	4	1	26	क्व१॒ स्य वी॒रः को अ॑पश्य॒दिन्द	4	2	8	सं भा॒नुना॑ यतते॒ सूर्य॑स्या॒ज	4	2	23	तं प्र॒त्नथा॑ पू॒र्वथा॑ वि॒श्व
4	1	12	यम॑ग्ने वाजसातम॒ त्वं चि॒न्मन्	4	1	27	तुभ्येदे॒ते म॒रुत॑ः सु॒शेवा॒ अ	4	2	9	उ॒रोष्ट॑ इन्द्र॒ राध॑सो वि॒भ्व	4	2	24	या॒दृगे॒व ददृ॑शे ता॒दृगु॑च्यते
4	1	13	म॒नु॒ष्वत्त्वा॒ नि धी॑महि मनु॒	4	1	28	यदीं॒ सोमा॑ ब॒भ्रुधू॑ता॒ अम॑न्	4	2	10	यदि॑न्द्र चित्र मे॒हनास्ति॒ त्	4	2	25	श्ये॒न आ॑सा॒मदि॑तिः क॒क्ष्यो॒३॒
4	1	14	प्र वि॑श्वसामन्नत्रि॒वदर्चा॑ प	4	1	29	इन्द्रो॒ रथा॑य प्र॒वतं॑ कृणोति	4	2	11	आ या॒ह्यद्रि॑भिः सु॒तं सोमं॑ स	4	2	26	वि॒दा दि॒वो वि॒ष्यन्नद्रि॑मु॒क
4	1	15	अग्ने॒ सह॑न्त॒मा भ॑र द्यु॒म्नस	4	1	30	प्र ते॒ पूर्वा॑णि॒ कर॑णानि वोच	4	2	12	स्व॑र्भानो॒रध॒ यदि॑न्द्र मा॒या	4	2	27	एता॒ धियं॑ कृ॒णवा॑मा सखा॒योऽप॒

ऋग्वेदः संहिता चतुर्थ अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	2	28	हयो॒ न वि॒द्वाँ अ॑युजि स्व॒यं	4	3	15	अभ्रा॑जि॒ शर्धो॑ मरुतो॒ यद॑र्ण	4	3	30	ऋ॒तेन॑ ऋ॒तमपि॑हितं ध्रु॒वं वां	4	4	14	अस्ति॒ हि वा॑मि॒ह स्तो॒ता स्मस
4	3	1	प्र॒यु॒ञ्ज॒ती दि॒व ए॑ति ब्रुवा	4	3	16	अंसे॑षु व ऋ॒ष्टयः॑ प॒त्सु खा॒द	4	3	31	अर्क॑विहस्ता सु॒कृते॑ प॒रस्पा	4	4	15	प्रति॑ प्रि॒यत॑मं॒ रथं॒ वृष॑णं
4	3	2	कद्॑ प्रि॒याय॒ धाम्ने॑ मनामहे॒	4	3	17	प्रय॑ज्यवो म॒रुतो॒ भ्राज॑दृष्ट	4	4	1	ऋत॑स्य गोपा॒वधि॑ तिष्ठथो॒ रथं॒	4	4	16	आ वां॑ नरा मनो॒युजोऽश्वा॑सः प्
4	3	3	दे॒वं वो॑ अ॒द्य स॑वि॒ता॒रमे॒षे॒	4	3	18	यदश्वा॑न्धू॒र्षु पृष॑ती॒रयु॑ग्	4	4	2	वरु॑णं वो रि॒शाद॑समृ॒चा मि॒त्र	4	4	17	आ भा॑त्य॒ग्निरु॒षसा॒मनी॑क॒मुद्
4	3	4	विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑	4	3	19	अग्ने॒ शर्ध॑न्त॒मा ग॒णं पि॒ष्ट	4	4	3	यश्चि॒केत॒ स सु॒क्रतु॑र्देव॒त्	4	4	18	प्रा॒त॒र्यावा॑णा प्रथ॒मा य॑जध्
4	3	5	अग्ने॑ सु॒तस्य॑ पी॒तये॒ विश्वै	4	3	20	यु॒ङ्ग्ध्वं ह्यरु॑षी॒ रथे॑ यु॒	4	4	4	आ चि॑कितान सु॒क्रतू॑ दे॒वौ म॑र	4	4	19	अश्वि॑ना॒वेह ग॑च्छतं॒ नास॑त्या
4	3	6	इन्द्र॑श्च वायवेषां सु॒तानां॑	4	3	21	आ रु॑द्रास॒ इन्द्र॑वन्तः स॒जोष	4	4	5	बळि॒त्था दे॑व निष्कृ॒तमादि॑त्य	4	4	20	वि जि॑हीष्व वनस्पते॒ योनिः॒ सू
4	3	7	स्व॒स्ति नो॑ मिमीताम॒श्विना॒ भ	4	3	22	ऋ॒ष्टयो॑ वो मरुतो॒ अंस॑यो॒रधि॒	4	4	6	प्र वो॑ मि॒त्राय॑ गायत॒ वरु॑णा	4	4	21	म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑ध॒योषो॑ रा॒य
4	3	8	प्र श्या॑वाश्व धृष्णु॒यार्चा॑	4	3	23	तमु॑ नू॒नं तवि॑षीमन्तमेषां स्त	4	4	7	त्री रो॑च॒ना व॑रुण॒ त्रीँरु॒त	4	4	22	ऐषु॑ धा वी॒र॒वद्यश॒ उषो॑ मघोनि
4	3	9	आ रु॒क्मैरा यु॒धा नर॑ ऋ॒ष्वा ऋ	4	3	24	प्र वः॒ स्पळ॑क्रन्त्सुवि॒ताय॑	4	4	8	पु॒रू॒रुणा॑ चि॒द्ध्यस्त्यवो॑ न	4	4	23	द्यु॒तद्या॑मानं बृ॒हतीमृ॒तेन॑
4	3	10	अधा॒ नरो॒ न्यो॑ह॒तेऽधा॑ नि॒युत	4	3	25	ईळे॑ अ॒ग्निं स्वव॑सं॒ नमो॑भिरि	4	4	9	आ नो॑ गन्तं रिशादसा॒ वरु॑ण॒ मि	4	4	24	यु॒ञ्जते॒ मन॑ उ॒त यु॑ञ्जते॒ धि
4	3	11	को वे॑द॒ जान॑मेषां॒ को वा॑ पु॒	4	3	26	के ष्ठा॑ नरः॒ श्रेष्ठ॑तमा॒ य ए	4	4	10	आ मि॒त्रे वरु॑णे व॒यं गी॒र्भिर	4	4	25	तत्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒व
4	3	12	आ यं नरः॑ सु॒दान॑वो ददा॒शुषे॑	4	3	27	उ॒त त्वा॒ स्त्री शशी॑यसी पुं॒स	4	4	11	यद॒द्य स्थः॒ प॑रा॒वति॒ यद॑र्वा॒	4	4	26	अना॑गसो॒ अदि॑तये दे॒वस्य॑ सवि॒
4	3	13	शर्धं॑शर्धं व एषां॒ व्रातं॑व्र	4	3	28	ई॒ं वह॑न्त आ॒शुभिः॒ पिब॑न्तो म	4	4	12	यु॒वोरत्रि॑श्चिकेतति॒ नरा॑ सु॒	4	4	27	अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः
4	3	14	प्र शर्धा॑य॒ मारु॑ताय॒ स्वभा॑न	4	3	29	ते नो॒ वसू॑नि॒ काम्या॑ पुरुश्च	4	4	13	कूष्ठो॑ देवावश्विना॒द्या दि॒वो	4	4	28	दि॒वो नो॑ वृ॒ष्टिं म॑रुतो ररीध

ऋग्वेदः संहिता चतुर्थ अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	4	29	बळि॒त्था पर्व॑तानां खि॒द्रं बि	4	5	8	प्र नव्य॑सा॒ सह॑सः सू॒नुमच्छा॑	4	5	23	तं त्वा॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरो घृ॒त	4	6	8	शवि॑ष्ठं न॒ आ भ॑र शूर॒ शव॒ ओजि
4	4	30	प्र स॒म्राजे॑ बृ॒हद॑र्चा गभी॒र	4	5	9	मू॒र्धानं॑ दि॒वो अ॑र॒तिं पृ॑थि	4	5	24	एह्यू॒ षु ब्रवा॑णि तेऽग्न॑ इ॒	4	6	9	द्यौर्न य इ॑न्द्रा॒भि भूमा॒र्य
4	4	31	इ॒मामू॒ नु क॒वित॑मस्य मा॒यां म	4	5	10	पृ॒क्षस्य॒ वृष्णो॑ अरु॒षस्य॒ न	4	5	25	प्र॑त्न॒वन्नवी॑य॒साग्ने॑ द्यु॒	4	6	10	प्र श्ये॒नो न म॑दि॒रम॒ंशु॒म॑स्म
4	4	32	इन्द्रा॑ग्नी॒ यम॑वथ उ॒भा वाजे॑	4	5	11	अह॑श्च कृ॒ष्णमह॒रर्जु॑नं च॒ वि	4	5	26	ऋ॒त्वा॒ दा अ॑स्तु॒ श्रेष्ठो॑ऽ	4	6	11	इ॒मा उ॑ त्वा पु॒रु॒तम॑स्य का॒रो
4	4	33	प्र वो॑ म॒हे म॒तयो॑ यन्तु॒ विष	4	5	12	पु॒रो वो॑ म॒न्द्रं दि॒व्यं सु॑	4	5	27	यो नो॑ अग्ने दु॒रेव॒ आ मर्तो॑	4	6	12	तं पृ॒च्छन्तोऽव॑रासः॒ परा॑णि प
4	4	34	अ॒पा॒रो वो॑ महि॒मा वृ॒द्धश॑वसस्	4	5	13	यज॑स्व होतरिषि॒तो यजी॑या॒नग्ने	4	5	28	ब्रह्म॑ प्र॒जाव॒दा भ॑र॒ जात॑वे	4	6	13	य एक॒ इद्धव्य॑श्चर्षणी॒नामिन्द
4	4	35	त्वं ह्य॑ग्ने प्रथ॒मो म॒नोता॒स	4	5	14	मध्ये॑ होता॑ दुरो॒णे ब॒र्हिषो॑	4	5	29	प्र दे॒वं दे॒ववी॑तये॒ भर॑ता व॒स	4	6	14	अ॒या ह॒ त्यं मा॒यया॑ वावृधा॒नं
4	4	36	स॒प॒र्येण्यः॒ स प्रि॒यो वि॒क्ष	4	5	15	त्वद् विश्वा॑ सुभग॒ सौभ॑गान्य	4	5	30	वी॒ती यो दे॒वं मर्तो॑ दु॒व॒स्ये	4	6	15	सु॒त इत्त्वं निमि॑श्ल इन्द्र॒
4	5	1	त्वं हि क्षैत॑व॒द्यशोऽग्ने॑ मि	4	5	16	अ॒ग्ना यो मर्त्यो॒ दुवो॒ धियं॑	4	6	1	पिबा॒ सोम॑म॒भि यमु॑ग्र॒ तर्द॑	4	6	16	ब्रह्मा॑णि॒ हि च॑कृ॒षे वर्ध॑ना
4	5	2	त्वे॒षस्ते॑ धू॒म ऋ॑ण्वति दि॒वि	4	5	17	इ॒ममू॒ षु वो॒ अति॑थिमु॒ष॒र्बुधं॑	4	6	2	तव॒ क्रत्वा॒ तव॒ तद्द॒ंसना॑भिर	4	6	17	वृषा॒ मद॒ इन्द्रे॒ श्लोक॑ उ॒क्
4	5	3	अग्ने॒ स क्षे॑षदृत॒पा ऋ॒तेजा	4	5	18	अ॒ग्निम॑ग्निं वः स॒मिधा॑ दुवस्	4	6	3	व॒र्धान्यं॑ विश्वे॑ म॒रुतः॑ स॒ज	4	6	18	वि त्वदापो॒ न पर्व॑तस्य पृ॒ष्ठ
4	5	4	स ईं॑ रे॒भो न प्रति॑ वस्त उ॒स्	4	5	19	तम॑ग्ने पास्यु॒त तं पि॑पर्षि॒	4	6	4	तमु॑ ष्टु॒हि यो अ॒भिभू॑त्योजा	4	6	19	या त॑ ऊ॒तिर॑व॒मा या प॑र॒मा या
4	5	5	यथा॑ होत॒र्मनु॑षो दे॒वता॑ता य॒	4	5	20	अग्ने॑ विश्वे॑भिः स्वनीक दे॒वै	4	6	5	स॒हि धी॒भिर्हव्यो॒ अस्त्यु॒ग्र	4	6	20	स प॑त्यत उ॒भयो॑र्नृ॒म्णम॒योर्य
4	5	6	आ सूर्यो॒ न भा॑नु॒मद्भि॑र॒र्कै	4	5	21	त्वम॑ग्ने य॒ज्ञानां॒ होता॒ विश	4	6	6	आ स॒हस्रं॑ प॒थिभि॑रिन्द्र रा॒य	4	6	21	श्रु॒धी न॑ इन्द्र॒ ह्वया॑मसि त
4	5	7	हु॒वे वः॑ सू॒नुं सह॑सो॒ यु॒वान॑	4	5	22	त्वं दू॒तो अम॑र्त्य॒ आ व॑हा॒ द	4	6	7	म॒हाँ इन्द्रो॑ नृ॒वदा च॑र्षणि॒	4	6	22	त्वं श्र॒द्धाभि॒र्मन्दसा॒नः सो

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	6	23	किम॑स्य॒ मदे॒ किम्व॑स्य पी॒ताव
4	6	24	त्रिं॒शच्छ॑तं व॒र्मिण॑ इन्द्र
4	6	25	आ गावो॑ अग्मन्नु॒त भ॒द्रम॑क्र॒
4	7	1	इन्द्रं॑ वो॒ नर॑ः स॒ख्याय॑ सेप
4	7	2	भूय॒ इद्वा॑वृधे वी॒र्या॑यँ॒ एक
4	7	3	अभू॒रेको॑ रयिपते रयी॒णामा हस्त
4	7	4	अपू॑र्व्या पुरु॒तमा॑न्यस्मै म॒
4	7	5	य ओजि॑ष्ठ इन्द्र॒ तं सु नो॑ दा
4	7	6	नू॒नं न॑ इन्द्राप॒राय॑ च स्या॒
4	7	7	क॒दा भुव॑न्र॒थक्ष॑याणि॒ ब्रह्म
4	7	8	स॒त्रा मदा॑स॒स्तव॑ वि॒श्वज॑न्य
4	7	9	स तु श्रु॑धि॒ श्रुत्या॒ यो दु॑
4	7	10	अपा॑दि॒त उदु॑ नश्चि॒त्रत॑मो म॒
4	7	11	म॒न्द्रस्य॑ क॒वेर्दि॒व्यस्य॒ व
4	7	12	इन्द्र॒ पिब॒ तुभ्यं॑ सु॒तो मदा

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	7	13	अहे॑ळमान॒ उप॑ याहि य॒ज्ञं तुभ्
4	7	14	प्रत्य॑स्मै॒ पिपीष॑ते॒ विश्वा॑
4	7	15	यस्य॒ त्यच्छम्ब॑रं॒ मदे॒ दिवो॑
4	7	16	यो र॑यिवो र॒यिंत॑मो॒ यो द्यु॒म
4	7	17	तद्वं॑ उ॒क्थस्य॑ ब॒र्हणेन्द्रा॑
4	7	18	मा जस्व॑ने वृषभ नो ररीथा॒ मा त
4	7	19	इ॒दं त्यत्पात्र॑मिन्द्र॒पान॒मि
4	7	20	वृषा॑सि दि॒वो वृ॑ष॒भः पृ॑थि॒व्
4	7	21	आन॑यत्परा॒वत॒ः सुनी॑ती तु॒र्वश
4	7	22	नय॒सीद्वति॒ द्विष॑ः कृ॒णोष्यु॑
4	7	23	तमु॑ त्वा॒ यः पु॒रासि॑थ॒ यो वा
4	7	24	य एक॒ इत्तमु॑ ष्टुहि कृष्टी॒ना
4	7	25	नो॑ नि॒युद्भि॒रा पृ॑ण॒ काम॒ं व
4	7	26	दूणाशं॑ स॒ख्यं तव॒ गौर॑सि वीर
4	7	27	त्वामिद्धि हवा॑महे सा॒ता वाज॑स

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	7	28	त्वामु॒ग्रमव॑से चर्षणी॒सहं॒ रा
4	7	29	अध॑ स्मा नो वृ॒धे भ॒वेन्द्र॑ न
4	7	30	स्वा॒दुष्कि॑ला॒यं मधु॑माँ उ॒ताय
4	7	31	धृ॒षत्पि॑ब क॒लशे॒ सोम॑मिन्द्र
4	7	32	त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द
4	7	33	शृ॒ण्वे वी॒र उ॒ग्रमु॑ग्रं दमा॒
4	7	34	दि॒वेदि॑वे स॒दृशी॑र॒न्यमर्धं॑
4	7	35	वन॑स्पते वी॒ड्व॑ङ्गो॒ हि भूया
4	8	1	य॒ज्ञाय॑ज्ञा वो अ॒ग्नये॑ गि॒रा
4	8	2	आ यः प॒प्रौ भा॒नुना॒ रोद॑सी उ॒
4	8	3	आ स॑खायः सब॒र्दुघां॑ धे॒नुम॑जध
4	8	4	म का॑कु॒म्बीर॒मुद्वृ॑हो॒ वन॒स्प
4	8	5	स्तु॒षे जनं॑ सुव्र॒तं नव्य॑सीभ
4	8	6	पर्ज॑न्यवाता वृषभा पृथि॒व्याः
4	8	7	आ यु॑वानः कवयो यज्ञियासो॒ मरु॑

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	8	8	हु॒वे वो॑ दे॒वीमदि॑तिं॒ नमो॑भि
4	8	9	अ॒भि त्यं वी॒रं गिर्व॑णसम॒र्चे
4	8	10	ते नो॑ रा॒यो द्यु॒मतो॒ वाज॑वतो
4	8	11	उदु॒ त्यच्चक्षु॒र्महि॑ मि॒त्रय
4	8	12	मा नो॒ वृका॑य वृ॒क्ये॑ समस्मा
4	8	13	ते न॒ इन्द्र॑ः पृथि॒वी क्षाम॑
4	8	14	न तद्दि॒वा न पृ॑थि॒व्यानु॑ मन्
4	8	15	इन्द्रो॒ नेदि॑ष्ठ॒मव॒साग॑मिष्ठ
4	8	16	स्तो॒त्रमिन्द्रो॑ म॒रुद्ग॑ण॒स्
4	8	17	व॒यमु॑ त्वा पथस्पते॒ रथं॒ न वा
4	8	18	वि पू॑षन्ना॒र॑या तुद प॒णेरि॑च्
4	8	19	सं पू॑षन्वि॒दुषा॑ नय॒ यो अञ्ज॑
4	8	20	पूष॒न्ननु॒ प्र गा इ॑हि॒ यज॑मान
4	8	21	एहि॒ वां वि॑मुचो नपा॒दाघृ॑णे॒
4	8	22	ए॑नमा॒दिदे॑शति कर॒म्भादिति॑ पू

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
4	8	23	इन्द्रा॒ नु पू॒षणा॑ व॒यं स॒ख्य
4	8	24	शु॒क्रं ते॑ अ॒न्यद्य॑ज॒तं ते॑
4	8	25	प्र नु वो॑चा सु॒तेषु॑ वां वी॒र
4	8	26	इन्द्रा॑ग्नी अ॒पादि॒यं पूर्वा॑ग
4	8	27	श्नथ॑द्वृ॒त्रमु॒त स॑नोति॒ वाज॒
4	8	28	ह॒तो वृ॒त्राण्यार्या॑ ह॒तो दास
4	8	29	इ॒द्ध आ॒विवा॑सति सु॒म्नमिन्द्र
4	8	30	इ॒यम॑ददाद्रभ॒समृ॑ण॒च्युतं॒ दिव
4	8	31	त्वं दे॑वि सरस्व॒त्यवा॒ वाजे॑ष
4	8	32	आ॒प॒प्रुषी॒ पार्थि॑वान्यु॒रु र

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

पञ्चम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	1	1	स्तु॒षे नरा॑ दि॒वो अ॒स्य प्र॒स
5	1	2	ता भु॒ज्युं विभि॑र॒द्भ्यः सं॑मु
5	1	3	क्व॑१॒त्या व॒ल्गू पु॑रुहू॒ताद्य
5	1	4	यु॒वं श्री॒भिर्द॑र्श॒ताभि॑रा॒भ
5	1	5	उद॒॑ श्रि॒य उ॒षसो॒ रोच॑माना॒ अ
5	1	6	ए॒षा स्या नो॑ दुहि॒ता दि॑वो॒जा
5	1	7	वपु॒र्नु तच्चि॑कि॒तुषे॑ चिदस्तु
5	1	8	त इदु॒ग्राः शव॑सा धृ॒ष्णुषे॑णा
5	1	9	विश्वे॑षां वः स॒तां ज्येष्ठ॑तम
5	1	10	ता हि क्ष॒त्रं धा॒रये॑थे॒ अनु॒
5	1	11	श्रु॒ष्टी वां॑ य॒ज्ञ उद्य॑तः स
5	1	12	यं यु॒वं दा॒श्वध्व॑राय देवा र॒
5	1	13	सं वा॒ं कर्म॑णा॒ समि॒षा हि॑नो॒
5	1	14	घृ॒तव॑ती॒ भुव॑नानामभि॒श्रियो॒र
5	1	15	उदु॒ ष्य दे॒वः स॑वि॒ता हिर॑ण्॒
5	1	16	इन्द्रा॑सोमा॒ महि॒ तद्वां॑ महि
5	1	17	यो अ॑द्रि॒भित्प्र॑थम॒जा ऋ॒तावा
5	1	18	सोमा॑रुद्रा धा॒रये॑थामसु॒र्य॑१॒
5	1	19	जी॒मूत॑स्येव भवति॒ प्रती॑क॒ं य
5	1	20	रथे॒ तिष्ठ॑न्नयति वा॒जिन॑ः पु॒
5	1	21	सु॒प॒र्णं व॑स्ते मृ॒गो अ॑स्या॒
5	1	22	अव॑सृष्टा॒ परा॑ पत॒ शर॑व्ये॒ ब
5	1	23	अ॒ग्निं नरो॒ दीधि॑तिभिर॒रण्यो॒
5	1	24	उप॒ यमेति॑ युव॒तिः सु॒दक्ष॑ं द
5	1	25	मा शूने॑ अग्ने॒ नि ष॑दाम नृ॒णा
5	1	26	अ॒यं सो अ॒ग्निराहु॑तः पुरु॒त्र
5	1	27	त्वम॑ग्ने सु॒हवो॑ र॒ण्वसं॑दृक्
5	2	1	जु॒षस्व॑ नः स॒मिध॑मग्ने अ॒द्य
5	2	2	उ॒त योष॑णे दि॒व्ये म॒ही न॑ उ॒ष
5	2	3	अ॒ग्निं वो॑ दे॒वम॒ग्निभि॑ः स॒ज
5	2	4	सु॒सं॒दृक्ते॑ स्वनीक॒ प्रती॑कं
5	2	5	प्र वः॑ शु॒क्राय॑ भा॒नवे॑ भरध्॒
5	2	6	ईशे॒ ह्य॑१॒ग्निर॒मृत॑स्य॒ भूरे॒र
5	2	7	प्राग्नये॑ त॒वसे॑ भरध्व॒ं गिर॑ं
5	2	8	त्वे अ॑सु॒र्य॑१॒ वस॑वो॒ न्यृ॑ण्॒
5	2	9	प्र स॒म्राजो॒ असु॑रस्य॒ प्रश॑स
5	2	10	प्र वो॑ दे॒वं चि॑त्सहसा॒नम॒ग्न
5	2	11	इ॒न्धे राजा॒ सम॒र्यो नमो॑भि॒र्
5	2	12	अबो॑धि जा॒र उ॒षसा॑मु॒पस्था॒द्ध
5	2	13	उ॒षो न जा॒रः पृ॒थु पाजो॑ अश्रे
5	2	14	म॒हाँ अ॑स्यध्व॒रस्य॑ प्रके॒तो
5	2	15	अग॑न्म म॒हा नम॑सा॒ यवि॑ष्ठ॒ं य
5	2	16	प्राग्नये॑ विश्व॒शुचे॑ धियं॒धे
5	2	17	स॒मिधा॑ जा॒तवे॑दसे दे॒वाय॑ दे॒
5	2	18	उ॒प॒सद्या॑य मी॒ळ्हुषे॑ आ॒स्ये॑
5	2	19	सेमां वे॑तु॒ वष॑ट्कृतिम॒ग्निर्
5	2	20	नो॒ राधा॒ंस्या भ॒रेशा॑नः सहसो
5	2	21	ए॒ना वो॑ अ॒ग्निं नम॑सो॒र्जो नप
5	2	22	त्वे अ॑ग्ने स्वाहुत प्रि॒यास॑ः
5	2	23	अग्ने॒ भव॑ सु॒षमि॑धा॒ समि॑द्ध उ
5	2	24	त्वे ह॒ यत्पि॒तर॑श्चिन्न इन्द्॒
5	2	25	पु॒रो॒ळा इत्तु॒र्वशो॒ यक्षु॑रा
5	2	26	एक॑ं च॒ यो विं॑श॒तिं च॑ श्रव॒स
5	2	27	अ॒र्धं वी॒रस्य॑ शृत॒पाम॑नि॒न्द
5	2	28	प्र ये गृ॒हादम॑मदुस्त्वा॒या प॑
5	2	29	यस्ति॒ग्मशृ॑ङ्गो वृष॒भो न भी॒म
5	2	30	सना॒ ता त॑ इन्द्र॒ भोज॑नानि रा
5	3	1	उ॒ग्रो ज॑ज्ञे वी॒र्या॑य स्व॒धा
5	3	2	नू चि॒त्स भ्रे॑षते॒ जनो॒ न रे॑
5	3	3	असा॑वि दे॒वं गोऋ॑जीक॒मन्धो॒ न्

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	3	4	अ॒भि क्रत्वे॑न्द्र भू॒रध॒ ज्मन
5	3	5	पिबा॒ सोम॑मिन्द्र॒ मन्द॑तु त्व
5	3	6	भूरि॒ हि ते॒ सव॑ना॒ मानु॑षेषु॒
5	3	7	उदु॒ ब्रह्मा॑ण्यैरत श्रव॒स्येन
5	3	8	योनि॑ष्ट इन्द्र॒ सद॑ने अकारि॒
5	3	9	आ ते॑ म॒ह इ॑न्द्रोत्यु॑ग्र॒ सम
5	3	10	न सोम॒ इन्द्र॒मसु॑तो ममाद॒ नाब
5	3	11	इन्द्रं॒ नरो॑ ने॒मधि॑ता हवन्ते
5	3	12	ब्रह्मा॑ ण इ॒न्द्रोप॑ याहि वि॒
5	3	13	अ॒यं सोम॑ इन्द्र॒ तुभ्यं॑ सुन्
5	3	14	आ नो॑ देव॒ शव॑सा याहि शुष्मि॒न
5	3	15	प्र व॒ इन्द्रा॑य॒ माद॑नं॒ हर्य
5	3	16	म॒हाँ उ॒तासि॒ यस्य॒ तेऽनु॑ स्व
5	3	17	मो षु त्वा॑ वा॒घत॑श्च॒नारे अ॒स
5	3	18	स वी॒रो अप्र॑तिष्कुत॒ इन्द्रे॑
5	3	19	गम॒द्वाजं॑ वा॒जय॑न्निन्द्र॒ मर
5	3	20	तवेदि॑न्द्राव॒मं वसु॒ त्वं पु॑
5	3	21	न दु॑ष्टु॒ती मर्त्यो॑ विन्दते॒
5	3	22	श्वि॒त्यञ्चो॑ मा दक्षिण॒तस्क॑प
5	3	23	द॒ण्डाइ॒वेद्गो॒अज॑नास आस॒न्परि
5	3	24	उ॒तासि॑ मैत्रावरु॒णो व॑सिष्ठो॒
5	3	25	प्र शु॒क्रैतु॑ दे॒वी म॑नी॒षा अ
5	3	26	राजा॑ रा॒ष्ट्रानां॒ पेशो॑ न॒दी
5	3	27	प्रति॑ न॒ः स्तोम॒ं त्वष्टा॑ जु
5	3	28	शं न॑ इन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भ
5	3	29	शं न॒ इन्द्रो॒ वसु॑भिर्दे॒वो अ
5	3	30	शं नो॑ दे॒वा वि॒श्वदे॑वा भवन्
5	4	1	प्र ब्रह्मै॑तु॒ सद॑नादृ॒तस्य॒
5	4	2	आ यत्सा॒कं य॒शसो॑ वावशा॒नाः सर
5	4	3	आ वो॒ वाहि॑ष्ठो वहतु स्त॒वध्यै
5	4	4	वा॒सय॑सीव वे॒धस॒स्त्वं न॑ः कु॒द
5	4	5	उदु॒ ष्य दे॒वः स॑वि॒ता य॑याम ह
5	4	6	ऊ॒र्ध्वो अ॒ग्निः सु॑म॒तिं वस्व
5	4	7	ओ श्रु॒ष्टिर्वि॑द॒थ्या॒३ समे॑त
5	4	8	प्रा॒त॒रग्निं प्रा॒तरिन्द्रं॑
5	4	9	प्र ब्र॒ह्माणो॒ अङ्गि॑रसो नक्ष
5	4	10	प्र वो॑ य॒ज्ञेषु॑ देव॒यन्तो॑ अ
5	4	11	द॒धि॒क्रां व॑ः प्रथ॒मम॒श्विनो॒
5	4	12	आ दे॒वो या॑तु सवि॒ता सु॒रत्नो॑
5	4	13	इ॒मा रु॒द्राय॑ स्थि॒रध॑न्वने॒
5	4	14	आपो॒ यं व॑ः प्रथ॒मं दे॑व॒यन्त॑
5	4	15	ऋभु॑क्षणो वाजा मा॒दय॑ध्वम॒स्मे
5	4	16	स॒मु॒द्रज्ये॑ष्ठाः सलि॒लस्य॒ म
5	4	17	आ मां मि॑त्रावरुणे॒ह र॑क्षतं क
5	4	18	आ॒दि॒त्याना॒मव॑सा॒ नूत॑नेन सक्
5	4	19	आ॒दि॒त्यासो॒ अदि॑तयः स्याम॒ पू
5	4	20	प्र द्यावा॑ य॒ज्ञैः पृ॑थि॒वी न
5	4	21	वास्तो॑ष्पते॒ प्रति॑ जानीह्य॒स
5	4	22	अ॒मी॒व॒हा वा॑स्तोष्पते॒ विश्वा
5	4	23	क ई॒ं व्य॑क्ता॒ नर॒ः सनी॑ळा रु
5	4	24	स्वा॒यु॒धास॑ इ॒ष्मिण॑ः सुनि॒ष्
5	4	25	अत्या॑सो॒ न ये म॒रुत॒ः स्वञ्चो
5	4	26	मा वो॑ दा॒त्रान्म॑रुतो॒ निर॑रा
5	4	27	मध्वो॑ वो॒ नाम॒ मारु॑तं यजत्रा
5	4	28	प्र सा॑क॒मुक्षे॑ अर्चता ग॒णाय॒
5	4	29	यं त्राय॑ध्व इ॒दमि॑द॒ं देवा॑सो
5	4	30	स॒स्वश्चि॒द्धि त॒न्व॑१ः शुम्भ॑म
5	5	1	यद॒द्य सूर्य॒ ब्रवोऽना॑गा उ॒द
5	5	2	इ॒मे दि॒वो अनि॑मिषा पृथि॒व्याश
5	5	3	उद्वा॒ं चक्षु॑र्वरुण सु॒प्रती॑

ऋग्वेदः संहिता पञ्चम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	5	4	उत्सूर्यो᳚ बृ॒हद॒र्चींष्यं॑श्रे
5	5	5	उद्वे॑ति सु॒भगो॑ वि॒श्वच॑क्षाः
5	5	6	दि॒वि क्षय॑न्ता॒ रज॑सः पृथि॒व्
5	5	7	प्रति॑ वां॒ सूर॒ उदि॑ते सू॒क्त
5	5	8	प्र मि॒त्रयो॒र्वरु॑णयोः॒ स्तोम
5	5	9	उ॒त स्व॒राजो॒ अदि॑ति॒रद॑ब्धस्य
5	5	10	वि ये द॒धुः श॒रद॒ं मास॒मादह॑र्
5	5	11	तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तं शु॒क्रमु॒
5	5	12	प्रति॑ वां॒ रथं᳚ नृपती ज॒रध्यै
5	5	13	अ॒वि॒ष्टं धी॒ष्व॑श्विना न आ॒सु
5	5	14	आ शु॑भ्रा यातमश्विना॒ स्वश्वा॒
5	5	15	उ॒त त्यद्वां᳚ जु॒रते अ॑श्विना
5	5	16	आ वां॒ रथो॒ रोद॑सी बद्बधा॒नो ह
5	5	17	आ वि॑श्ववाराश्विना गतं न॒ः प्र
5	5	18	अप॒ स्वसु॑रु॒षसो॒ नग्जि॑हीते र

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	5	19	आ गोम॑ता नासत्या॒ रथे॒नाश्वा॑व
5	5	20	अता॑रिष्म॒ तम॑सस्पा॒रम॒स्य प्र
5	5	21	इ॒मा उं॑ वां॒ दिवि॑ष्टय उ॒स्रा
5	5	22	व्यु॑१॒षा आ॑वो दिवि॒जा ऋ॒तेना॑वि
5	5	23	उदु॒ ज्योति॑र॒मृतं᳚ वि॒श्वज॑न्
5	5	24	उपो॑ रुरुचे युव॒तिर्न योषा॒ वि
5	5	25	प्रति॑ के॒तवः॑ प्रथ॒मा अ॑दृश्र
5	5	26	व्यु॑१॒षा आ॑वः प॒थ्या॒३॒ जना॑नां॒
5	5	27	प्रति॒ स्तोमे॑भिरु॒षस॒ं वसि॑ष्
5	6	1	प्रत्यु॑ अदर्श्याय॒त्यु॑१॒च्छन्त
5	6	2	इन्द्रा॑वरुणा यु॒वम॑ध्व॒राय॑ न
5	6	3	म॒हे शु॒ल्काय॒ वरु॑णस्य॒ नु त्
5	6	4	यु॒वां न॑रा॒ पश्य॑मानास॒ आप्यं॑
5	6	5	यु॒वां ह॑वन्त उ॒भया॑स आ॒जिष्वि
5	6	6	आ वां᳚ राजानावध्व॒रे व॑वृत्यां

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	6	7	पु॒नी॒षे वा॑मर॒क्षसं᳚ मनी॒षां
5	6	8	धीरा॒ त्व॑स्य महि॒ना ज॒नूंषि॒
5	6	9	रद॑त्प॒थो वरु॑णः॒ सूर्या᳚य॒ प्
5	6	10	प्र शु॒न्ध्युव॒ं वरु॑णाय॒ प्रे
5	6	11	मो षु व॑रुण मृ॒न्मयं᳚ गृ॒हं रा
5	6	12	प्र वी॑र॒या शुच॑यो दद्रिरे वाम
5	6	13	कु॒वि॒दङ्ग नम॑सा॒ ये वृ॒धास॑ः
5	6	14	आ वा॑यो भूष शुचिपा॒ उप॑ नः स॒ह
5	6	15	शुचिं॒ नु स्तोम॒ं नव॑जातम॒द्ये
5	6	16	इ॒मामु॒ षु सोम॑सुति॒मुप॑ न॒ एन
5	6	17	इ॒यं वा॑म॒स्य मन्म॑न॒ इन्द्रा॑
5	6	18	इन्द्रा॑ग्नी॒ अव॒सा ग॑तम॒स्मभ्
5	6	19	प्र क्षोद॑सा॒ धाय॑सा सस्र ए॒षा
5	6	20	बृ॒हदु॑ गायिषे॒ वचो॑ऽसु॒र्या᳚
5	6	21	य॒ज्ञे दि॒वो नृ॒षद॑ने पृथि॒व्य

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	6	22	तं श॒ग्मासो॑ अरु॒षासो॒ अश्वा॒
5	6	23	अध्व॑र्यवोऽरु॒णं दु॒ग्धम॒ंशुं
5	6	24	प॒रो मात्र॑या त॒न्वा॑ वृधान॒ न
5	6	25	नू मर्तो᳚ दयते सनि॒ष्यन्यो विष
5	7	1	ति॒स्रो वाच॒ः प्र व॑द॒ ज्योति॑
5	7	2	प॒र्जन्या॑य॒ प्र गा॑यत दि॒वस्प
5	7	3	सं॒व॒त्स॒रं श॑शया॒ना ब्रा॑ह्म॒
5	7	4	गोमा॑यु॒रेको॑ अ॒जमा॑यु॒रेक॒ः प
5	7	5	इन्द्रा॑सोमा॒ तप॑त॒ं रक्ष॑ उ॒ब
5	7	6	इन्द्रा॑सोमा॒ परि॑ वां भूतु वि
5	7	7	प॒रः सो अ॑स्तु त॒न्वा॒३॒ तना॑ च
5	7	8	यो माया॑तु॒ यातु॑धा॒नेत्याह॒
5	7	9	इन्द्रो॑ यातू॒नाम॑भवत्पराश॒रो
5	7	10	मा चि॑द॒न्यद्वि शं᳚सत॒ सखा॑यो॒
5	7	11	वस्याँ᳚ इन्द्रासि मे पि॒तुरु॒त

ऋग्वेदः संहिता पञ्चम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	7	12	यत्तु॒दत्सूर॒ एत॑शं व॒ङ्कू वात	5	7	27	श॒ग्धी न॑ इन्द्र॒ यत्त्वा॑ र॒य
5	7	13	आ त्व॑१॒द्य स॒धस्तु॑तिं वा॒वातुः	5	7	28	कण्वा॑इव॒ भृग॑वः॒ सूर्या॑इव॒ व
5	7	14	मदे॑नेषि॒तं मद॑मु॒ग्रमु॒ग्रेण॒	5	7	29	यं मे॒ दुरिन्द्रो॑ म॒रुतः॒ पाक
5	7	15	पिबा॒ त्व॑१॒स्य गिर्व॑णः सु॒तस्य	5	7	30	यदि॑न्द्र॒ प्रागपा॒गुद॒ङ् न्यं॑
5	7	16	आ यदश्वा॒न्वन॑न्वतः श्र॒द्धया॒	5	7	31	स॒हस्रे॑णेव सचते यवी॒युधा॒ यस्
5	7	17	इ॒दं व॑सो सु॒तमन्धः॒ पिबा॒ सुप	5	7	32	अध्व॑र्यो द्रा॒वया॒ त्वं सोम॒म
5	7	18	गोभि॒र्यदी॑म॒न्ये अ॒स्मन्मृ॒गं	5	7	33	सं नः॑ शिशीहि भु॒रिजो॑रिव क्षु
5	7	19	ताँ आ॒शीरं॑ पुरो॒ळाश॒मिन्द्रे॒	5	8	1	दू॒रादि॒हेव॒ यत्स॒त्य॑रु॒णप्सु
5	7	20	व॒यमु॑ त्वा त॒दिद॑र्था॒ इन्द्र	5	8	2	ता सु॑दे॒वाय॑ दा॒शुषे॑ सुमे॒धा
5	7	21	वि॒द्मा ह्य॑स्य वी॒रस्य॑ भूरि॒	5	8	3	वा॒वृ॒धा॒ना शु॑भस्पती॒ दस्रा॒
5	7	22	पाता॑ वृत्र॒हा सु॒तमा घा॑ गम॒न	5	8	4	पु॒रु॒त्रा चि॒द्धि वां॑ नरा वि
5	7	23	ए॒वेदे॒ष तु॑विकू॒र्मिर्वा॑जाँ॒	5	8	5	उ॒त नो॑ दि॒व्या इष॑ उ॒त सिन्धू
5	7	24	सनि॑ता॒ विप्रो॒ अर्व॑द्भि॒र्हन	5	8	6	यथो॒त कृत्व्ये॒ धने॑ऽशुं गोष्
5	7	25	पिबा॑ सु॒तस्य॑ र॒सिनो॒ मत्स्वा	5	8	7	आ व॑हेथे परा॒कात्पू॒र्वीर॒श्नन
5	7	26	इन्द्रो॑ म॒ह्ना रोद॑सी पप्रथ॒च	5	8	8	यु॒वं मृ॒गं जा॑गृ॒वांसं॒ स्वद॑

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
5	8	9	म॒हाँ इन्द्रो॒ य ओज॑सा प॒र्जन्	5	8	24	कद्ध॑ नू॒नं क॑धप्रियो॒ यदिन्द्
5	8	10	वि चि॑द्वृ॒त्रस्य॒ दोध॑तो॒ वज्	5	8	25	आ नो॒ विश्वा॑भिरू॒तिभि॒रश्वि॑न
5	8	11	अ॒हं प्र॒त्नेन॒ मन्म॑ना॒ गिरः॑	5	8	26	यच्चि॒द्धि वां॑ पु॒र ऋष॑यो जुह
5	8	12	यस्त॑ इन्द्र म॒हीर॒पः स्त॑भू॒य	5	8	27	अतः॑ स॒हस्र॑निर्णिजा॒ रथे॒ना य
5	8	13	त्वामि॒च्छ॑वसस्पते॒ कण्वा॑ उ॒क्	5	8	28	प्रास्मा॒ ऊर्जं॑ घृत॒श्चुत॒मश्
5	8	14	यद॒ङ्ग त॑विषी॒यस॒ इन्द्र॑ प्र॒	5	8	29	याभि॑र्नरा त्र॒सद॑स्यु॒माव॑तं॒
5	8	15	कण्वा॑स इन्द्र ते म॒तिं विश्वे	5	8	30	आ नू॒नम॑श्विना यु॒वं व॒त्सस्य॑
5	8	16	आ नो॑ याहि परा॒वतो॒ हरि॑भ्यां	5	8	31	यन्ना॑सत्या भु॒रण्यथो॒ यद्वा॑
5	8	17	ऋषि॒र्हि पू॑र्व॒जा अस्येक॒ ईशा	5	8	32	या॒तं छ॑र्दि॒ष्पा उ॒त नः॑ पर॒स
5	8	18	प्र यद्व॑स्त्रि॒ष्टुभ॒मिषं॒ मर	5	8	33	अभु॑त्स्यु॒ प्र दे॒व्या सा॒कं
5	8	19	यु॒ष्माँ उ॒ नक्त॑मू॒तये॑ यु॒ष्	5	8	34	यत्स्थो दी॒र्घप्र॑सद्मनि॒ यद्व
5	8	20	मरु॑तो॒ यद्ध॑ वो दि॒वः सु॑म्ना	5	8	35	त्वम॑ग्ने व्र॒तपा अ॑सि दे॒व आ
5	8	21	ये द्र॒प्सा इ॑व॒ रोद॑सी॒ धम॒न्त	5	8	36	विप्रं॒ विप्रा॒सोऽव॑से दे॒वं म
5	8	22	न॒हि ष्म॒ यद्ध॑ वः पु॒रा स्तोम	PARANKUSHACHAR INSTITUTE OF VEDIC STUDIES (REGD.)			
5	8	23	उ॒शना॒ यत्प॑रा॒वत॑ उ॒क्ष्णो रन				

ऋग्वेदः संहिता

षष्ठम अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता षष्ठम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	1	1	य इ॑न्द्र सोम॒पात॑मो॒ मदः॑ शवि	6	1	16	त्वं हि स्तोम॑व॒र्धन॒ इन्द्रा	6	1	31	यस्या॒ग्निर्वपु॑र्गृ॒हे स्तोमं	6	2	6	द॒श॒स्यन्ता॒ मन॑वे पू॒र्व्यं॑ द
6	1	2	यो नो॑ दे॒वः प॑रा॒वतः॑ सखित्व॒	6	1	17	तम्व॒भि प्र गा॑यत पुरुहू॒तं पु	6	1	32	येन॒ चष्टे॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र	6	2	7	यदधि॑गावो॒ अधि॑गू इ॒दा चि॒
6	1	3	गर्भो॑ य॒ज्ञस्य॑ देव॒युः क्रतु	6	1	18	तद॒द्या चि॑त्त उ॒क्थिनोऽनु॑ ष्	6	1	33	ईळे॑ गि॒रा मनु॑र्हितं॒ यं दे॒व	6	2	8	मनो॑जवसा वृषणा मदच्युता मक्षुं
6	1	4	यत्सोम॑मिन्द्र॒ विष्ण॑वि॒ यद्व	6	1	19	स॒त्रा त्वं पु॑रुष्टुतँ॒ एको॑	6	1	34	न त्वा॑ रासीया॒भिश॑स्तये वसो॒	6	2	9	ईळि॑ष्वा॒ हि प्र॑ती॒व्यं१॒ यज॑स
6	1	5	म॒हीर॑स्य॒ प्रणी॑तयः पू॒र्वीरु	6	1	20	प्र स॒म्राजं॑ चर्षणी॒नामिन्द्र	6	1	35	तव॑ द्र॒प्सो नील॑वान्वा॒श ऋ॒त्	6	2	10	अग्ने॑ या॒हि सु॑श॒स्तिभि॑र्ह॒व
6	1	6	य॒दा वृ॒त्रं न॑दी॒वृतं॒ शव॑सा	6	1	21	इन्द्रो॑ ब्र॒ह्मेन्द्र॒ ऋषि॒रि	6	1	36	आ ग॑न्ता॒ मा रि॑षण्यत॒ प्रस्था	6	2	11	अग्ने॒ तव॒ त्ये अ॑ज॒रेन्धा॑नास
6	1	7	इन्द्रः॑ सु॒तेषु॒ सोमे॑षु॒ क्र	6	1	22	आ या॑हि सुषु॒मा हि त॒ इन्द्र॒	6	1	37	अमा॑य वो मरुतो॒ यात॑वे॒ द्यौर्	6	2	12	व्यं॑श्वस्त्वा वसु॒विद॑मुक्ष॒ण्
6	1	8	स्तो॒ता यत्ते॒ विच॑र्षणिरतिप्र	6	1	23	स्वा॒दुष्टे॑ अस्तु सं॒सुदे॒ मध	6	1	38	स॒मा॒नम॒ञ्ज्ये॑षां॒ वि भ्रा॑जन	6	2	13	यो अ॑स्मै ह॒व्यदा॑तिभि॒राहु॑ति
6	1	9	तू॒तु॒जा॒नो म॑हेम॒तेऽश्वे॑भिः	6	1	24	अ॒यं त॑ इन्द्र॒ सोमो॒ निपू॑तो॒	6	1	39	यस्य॑ वा यू॒यं प्रति॑ वा॒जिनो॑	6	2	14	म॒हो विश्वाँ॑ अ॒भि ष॒तो॒३॑भि ह॒
6	1	10	इन्द्रं॑ वर्धन्तु नो॒ गिर॒ इन्	6	1	25	इ॒दं ह॑ नू॒नमे॑षां सु॒म्नं भि॑	6	1	40	गाव॑श्चिद्घा समन्यवः सजा॒त्ये॑	6	2	15	सखा॑य॒ आ शि॑षामहि॒ ब्रह्मेन्द्
6	1	11	यदि॑ मे स॒ख्यमा॒वर॑ इ॒मस्य॑ पा	6	1	26	अदि॑तिर्नो॒ दिवा॑ प॒शुमदि॑ति॒र	6	2	1	व॒यमु॑ त्वाम॑पूर्व्य स्थू॒रं न	6	2	16	आ त्वा॒ गोभि॑रिव ब्र॒जं गी॒र्भि
6	1	12	इन्द्र॒ त्वम॑वि॒तेद॑सी॒त्था स्	6	1	27	यु॒योता॒ शरु॑म॒स्मदाँ॑ आदि॑त्या	6	2	2	अच्छा॑ च त्वै॒ना नम॑सा॒ वदा॑मस	6	2	17	नू अ॒न्यत्रा॑ चिदद्रिव॒स्त्वन्
6	1	13	वृषा॒यमि॑न्द्र ते॒ रथ॑ उ॒तो ते	6	1	28	आ शर्म॒ पर्व॑ताना॒मोतापां वृ॑ण	6	2	3	त्वया॑ ह स्विद्यु॒जा व॒यं प्रत	6	2	18	एदु॒ मध्वो॑ म॒दिन्त॑रं सि॒ञ्च
6	1	14	यदि॑न्द्रा॒हं यथा॒त्वमीशी॑य॒ व	6	1	29	तं गू॑र्धया॒ स्व॑र्णरं दे॒वासो	6	2	4	मा ते॑ गोदत्र॒ निर॑राम॒ राध॑स॒	6	2	19	यस्यामि॑तानि वी॒र्या॒३॒ न राधः॒
6	1	15	वा॒वृ॒धा॒नस्य॑ ते व॒यं विश्वा॒	6	1	30	तस्येदर्व॑न्तो रं॑हयन्त आ॒शव॒स्	6	2	5	ओ त्यम॑ह्व॒ आ रथ॑म॒द्या दंसि॑ष	6	2	20	तमु॑ त्वा नू॒नमी॑महे॒ नव्यं॑ द

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	2	21	ता वां॒ विश्व॑स्य गो॒पा दे॒वा
6	2	22	सं या दानू॑नि ये॒मथु॑र्दि॒व्या
6	2	23	ते नो॑ ना॒वमु॑रुष्यत॒ दिवा॒ नक
6	2	24	अ॒यमेक॑ इ॒त्था पु॒रूरु च॑ष्टे॒
6	2	25	तत्सूर्यँ॒ रोद॑सी उ॒भे दो॒षा व
6	2	26	यु॒वोरु॒ षू रथं᳚ हुवे स॒धस्तु॑ं
6	2	27	द॒स्रा हि विश्व॑मानु॒षङ्म॒क्षू
6	2	28	वै॒य॒श्वस्य॑ श्रुतं नरो॒तो मे॑
6	2	29	वाहि॑ष्ठो वां॒ हवा॑नां॒ स्तोमो
6	2	30	तव॑ वायवृतस्पते॒ त्वष्टु॑र्जाम
6	2	31	अ॒ग्निरु॒क्थे पु॒रोहि॑तो॒ ग्रा
6	2	32	अ॒भि प्रि॒या म॑रुतो॒ या वो॒ अश
6	2	33	इ॒दा हि व॒ उप॑स्तुतिमि॒दा वा॒म
6	2	34	ऋ॒ते स विन्द॑ते यु॒धः सु॒गेभि॑
6	2	35	ये त्रि॒ंशति॒ त्रय॑स्प॒रो दे॒व

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	2	36	ब॒भ्रुरेको॒ विषु॑णः सू॒नरो॒ यु
6	2	37	न॒हि वो॒ अस्त्य॑र्भ॒को देवा॑सो
6	2	38	यो यजा॑ति॒ यजा॑त॒ इत्सु॒नव॑च्च
6	2	39	प्रति॑ प्रा॒शव्याँ᳚ इतः स॒म्यञ्च
6	2	40	ऐतु॑ पू॒षा र॒यिर्भगः॑ स्व॒स्ति
6	3	1	प्र कृ॒तान्यृ॑जी॒षिणः॒ कण्वा॒
6	3	2	यदि॑ मे रा॒रणः॑ सु॒त उ॒क्थे वा
6	3	3	यः सं॒स्थे चि॑च्छ॒तक्र॑तु॒रादी
6	3	4	न नू॒नं ब्र॒ह्मणा॑मृ॒णं प्रा॑श
6	3	5	अती॑हि मन्युषा॒विणं᳚ सुषु॒वांस
6	3	6	अह॑न्वृ॒त्रमृची॑षम और्णवा॒भम॑ह
6	3	7	व॒यं घ॑ त्वा सु॒ताव॑न्त॒ आपो॒
6	3	8	यो धृ॑षि॒तो योऽवृ॑तो॒ यो अस्ति
6	3	9	वृष॑णस्ते अ॒भीश॑वो॒ वृषा॒ कशा॑
6	3	10	न॒हि षस्तव॒ नो मम॑ शा॒स्त्रे अ

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	3	11	एन्द्र॑ याहि॒ हरि॑भि॒रुप॒ कण्व
6	3	12	स्मत्पु॑रंधिर्न॒ आ ग॑हि वि॒श्व
6	3	13	आ नो॑ या॒ह्युप॑श्रुत्यु॒क्थेषु
6	3	14	अ॒ग्निनेन्द्रे॑ण॒ वरु॑णेन॒ विष
6	3	15	हा॒रि॒द्र॒वेव॑ पतथो॒ वनेदु॒प स
6	3	16	मि॒त्रावरु॑णवन्ता उ॒त धर्म॑वन्
6	3	17	अत्रे॑रिव शृणुतं पू॒र्व्यस्तु॑
6	3	18	अ॒वि॒तासि॑ सुन्व॒तो वृ॒क्तब॑र्
6	3	19	प्रेदं ब्रह्म॑ वृ॒त्रतू᳚र्येष्
6	3	20	य॒ज्ञस्य॒ हि स्थ ऋ॒त्विजा॒ सस्
6	3	21	प्रा॒त॒र्याव॑भि॒रा ग॑तं दे॒वेभ
6	3	22	अ॒ग्निम॑स्तोष्यृ॒ग्मिय॑म॒ग्निम
6	3	23	अ॒ग्निर्जा॒ता दे॒वाना॑म॒ग्निर्
6	3	24	इन्द्रा॑ग्नी यु॒वं सु नः॒ सह॑न
6	3	25	यदि॑न्द्रा॒ग्नी जना॑ इ॒मे वि॒ह

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	3	26	अ॒स्मा ऊ॒ षु प्रभू॑तये॒ वरु॑णा
6	3	27	यस्मि॒न्विश्वा॑नि॒ काव्या॑ च॒क
6	3	28	अस्त॑भ्ना॒द् द्याम॑सु॑रो वि॒श्व
6	3	29	इ॒मे विप्र॑स्य वे॒धसो॒ऽग्नेरस्
6	3	30	कृ॒ष्णा रजां᳚सि पत्सु॒तः प्र॒य
6	3	31	उ॒क्षान्ना॑य व॒शान्ना॑य॒ सोम॑प
6	3	32	अग्ने॒ भ्रातः॒ सह॑स्कृत॒ रोहि॑
6	3	33	पु॒रु॒त्रा हि स॒दृङ्ङसि॒ विशो॒
6	3	34	घ्नन्मृ॒ध्राण्यप॒ द्विषो॒ दह॒न
6	3	35	अ॒ग्निं म॒न्द्रं पु॑रुप्रि॒यं
6	3	36	स॒मिधा॒ग्निं दु॑वस्यत घृ॒तैर्ब
6	3	37	म॒न्द्रं होता॑रमृ॒त्विजं᳚ चि॒त
6	3	38	अग्ने॒ नि पा॑हि न॒स्त्वं प्रति
6	3	39	अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्पतिः॑
6	3	40	अ॒ग्निः शुचि॑व्रततमः॒ शुचि॒र्व

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	3	41	युवा॑नं वि॒श्पतिं॑ क॒विं वि॒श्	6	4	7	महिं॑ वो मह॒तामवो॒ वरु॑ण॒ मित्र
6	3	42	आ घा॒ ये अ॒ग्निमि॑न्ध॒ते स्तृ॒	6	4	8	प॒रि॒ह्वृ॒तेद॒ना जनो॑ यु॒ष्माद
6	3	43	उ॒त त्वं म॑घवञ्छृणु॒ यस्ते॒ वष	6	4	9	आदि॑त्या॒ अव॒ हि ख्यताधि॒ कूला
6	3	44	शनै॑श्चि॒द्यन्तो॑ अद्रि॒वोऽश्वा	6	4	10	तद॑न्नाय॒ तद॑पसे॒ तं भा॒गमु॑पस
6	3	45	इ॒म उं॑ त्वा॒ वि च॑क्षते॒ सखा॑य	6	4	11	स्वा॒दोर॑भक्षि॒ वय॑सः सुमे॒धाः
6	3	46	स्तो॒त्रमिन्द्रा॑य गायत पुरुनृ	6	4	12	अ॒ग्निं न मा॑ मथि॒तं सं दि॑दीप
6	3	47	अपि॑वत्क॒द्रुवः॑ सु॒तमिन्द्रः॑	6	4	13	अप॒ त्या अ॑स्थु॒रनि॑रा॒ अमी॑वा
6	3	48	यद्द॑धि॒षे म॑न॒स्यसि॑ मन्दा॒नः	6	4	14	अ॒भि प्र वः॑ सु॒राध॑स॒मिन्द्र॑
6	3	49	मा सख्यु॒ः शून॒मा वि॑दे॒ मा पु	6	4	15	उ॒ग्रं न वी॒रं नम॒सोप॑ सेदिम॒
6	4	1	त्वाव॑तः पुरूवसो व॒यमि॑न्द्र प	6	4	16	प्र सु श्रु॒तं सु॒राध॑स॒मर्चा॑
6	4	2	तमिन्द्रं॒ दान॑मीमहे शवसा॒नमभी	6	4	17	प्र वी॒रमु॒ग्रं विवि॑चिं धन॒स्
6	4	3	न॒हि ते॑ शूर॒ राध॒सोऽन्तं॑ वि॒	6	4	18	यथा॒ मनौ॒ सांव॑रणौ॒ सोम॑मि॒न्द
6	4	4	विश्वे॑षामिर॒ज्यन्तं॒ वसू॑नां	6	4	19	यस्मै॒ त्वं व॑सो दा॒नाय॒ शिक्ष
6	4	5	अ स ए॑तु॒ य ईव॒दाँ अदे॑वः पूर॒	6	4	20	यथा॒ मनौ॒ विव॑स्वति॒ सोमं॑ श॒क
6	4	6	यो अश्वे॑भि॒र्वह॑ते॒ वस्त॑ उ॒स	6	4	21	यस्मै॒ त्वं व॑सो दा॒नाय॒ मंह॑स

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	4	22	उ॒प॒मं त्वा॑ म॒घोना॒ं ज्येष्ठं	6	4	37	पौ॒रो अश्व॑स्य पुरु॒कृद्गवा॑म॒
6	4	23	इन्द्र॒ नेदी॑य॒ एदि॑हि मि॒तमे॑	6	4	38	न पा॒पासो॑ मनामहे॒ नारा॑यासो॒
6	4	24	ए॒तत्त॑ इन्द्र वी॒र्यं॑ गी॒र्भ	6	4	39	त्वं नः॑ प॒श्चाद॑ध॒राद॑ुत्त॒रा
6	4	25	यदि॑न्द्र॒ राधो॒ अस्ति॑ ते॒ मा	6	4	40	प्रो अ॑स्मा॒ उप॑स्तुतिं॒ भर॑ता
6	4	26	भूरी॑दिन्द्र॑स्य वी॒र्यं॑१॒ व्यख्	6	4	41	विश्वे॑ त इन्द्र वी॒र्यं॑ दे॒व
6	4	27	प्रति॑ ते दस्यवे वृक॒ राधो॑ अद	6	4	42	स पू॒र्व्यो म॒हानां॑ वे॒नः क्र
6	4	28	यु॒वं दे॑वा॒ क्रतु॑ना पू॒र्व्य	6	4	43	यत्पाञ्च॑जन्यया वि॒शेन्द्रे॒ घ
6	4	29	यमृ॒त्विजो॑ बहु॒धा क॒ल्पय॑न्तः	6	4	44	उत्त्वा॑ मन्दन्तु॒ स्तोमा॑ः कृ
6	4	30	इ॒मानि॑ वां भाग॒धेया॑नि सिस्रत	6	4	45	क्व१॒ स्य वृ॑ष॒भो युवा॑ तुवि॒ग्
6	4	31	अवो॑चाम मह॒ते सौभ॑गाय स॒त्यं त	6	4	46	यदि॑न्द्र॒ प्रागपा॒गुद॒ङ्न्य॑ग
6	4	32	अग्न॒ आ या॑ह्य॒ग्निभि॒र्होता॑र	6	4	47	यच्चि॒द्धि शश्व॑ता॒मसीन्द्र॒ स
6	4	33	शोचा॑ शोचिष्ठ दीदि॒हि वि॒शे मय	6	4	48	तरो॑भिर्वो वि॒दद्व॑सु॒मिन्द्रं॑
6	4	34	आ नो॑ अग्ने वयो॒वृधं॑ र॒यिं पा	6	4	49	सचा॒ सोमे॑षु पुरुहूत वज्रिवो॒
6	4	35	स॒प्त होता॑र॒स्तमिदी॑ळते॒ त्वा	6	4	50	व॒यं घा॑ ते॒ अपू॒र्व्येन्द्र॒
6	4	36	उ॒भयं॑ शृ॒णव॑च्च न॒ इन्द्रो॑ अ	6	4	51	त्यान्नु क्ष॒त्रिया॒ँ अव॑ आदि॒

ऋग्वेदः संहिता   षष्ठम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	4	52	यद्वः॑ श्रा॒न्ताय॑ सुन्व॒ते वर	6	5	13	अ॒ग्निं सू॒नुं सह॑सो जा॒तवे॑दस
6	4	53	पर्षि॑ दी॒ने ग॑भी॒र आँ उग्र॑पु	6	5	14	ह॒विष्कृ॑णुध्व॒मा ग॑मदध्व॒र्यु
6	4	54	शश्व॒द्धि व॑ः सुदानव॒ आदि॑त्या	6	5	15	उ॒तो न्व॑स्य॒ यन्म॒हदश्वा॑वद्य
6	5	1	आ त्वा॒ रथं॒ यथो॒तये॑ सु॒म्नाय	6	5	16	अ॒भ्या॒र॒मिदद्र॑यो॒ निषि॑क्तं॒
6	5	2	प॒रोमा॑त्र॒मृची॑षम॒मिन्द्र॑मु॒	6	5	17	अधु॑क्षत्पि॒प्युषी॒मिष॒मूर्जं॑
6	5	3	यस्य॑ ते स्वा॒दु स॒ख्यं स्वा॒द	6	5	18	उदी॑राथामृताय॒ते यु॒ञ्जाथा॑मश्॒
6	5	4	सु॒रथाँ॑ आतिथि॒ग्वे स्व॑भी॒शूँ	6	5	19	अ॒श्विना॑ याम॒हूत॑मा॒ नेदि॑ष्ठ
6	5	5	प्रप्र॑ वस्त्रि॒ष्टुभ॒मिषं॑ म॒	6	5	20	किमि॒दं वां॑ पुराण॒वज्जर॑तोरिव
6	5	6	इन्द्रा॑य॒ गाव॑ आ॒शिरं॑ दुदु॒ह	6	5	21	वि॒शोवि॑शो वो॒ अति॑थिं वाज॒यन्॒
6	5	7	अपा॒दिन्द्रो॒ अपा॑द॒ग्निर्विश्॒	6	5	22	स॒बाधो॒ यं जना॑ इ॒मे॒३॒ग्निं ह॒
6	5	8	यो राजा॑ चर्षणी॒नां याता॒ रथे॑	6	5	23	यं त्वा॑ गो॒पव॑नो गि॒रा चनि॑ष्॒
6	5	9	आ प॑प्राथ महि॒ना वृष्ण्या॑ वृष	6	5	24	यु॒क्ष्वा हि दे॑व॒हूत॑माँ॒ अश्॒
6	5	10	अ॒न्यव्र॑त॒ममा॑नुष॒मय॑ज्वान॒मद	6	5	25	तस्मै॑ नू॒नम॒भिद्य॑वे वा॒चा वि
6	5	11	त्वं नो॑ अग्ने॒ महो॑भिः पा॒हि	6	5	26	कु॒वित्सु नो॒ गवि॑ष्ट॒येऽग्ने॑
6	5	12	त्वं र॒यिं पु॑रु॒वीर॒मग्ने॑ दा	6	5	27	इ॒मं नु मा॒यिनं॑ हुव॒ इन्द्र॒म

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	5	28	म॒रुत्वाँ॑ इन्द्र मीढ्वः॒ पिबा	6	6	5	प्रेष्ठं॑ वो॒ अति॑थिं स्तु॒षे
6	5	29	ज॒ज्ञा॒नो नु श॒तक्र॑तु॒र्वि पृ	6	6	6	अधा॒ त्वं हि न॒स्करो॒ विश्वा॑
6	5	30	निरा॑विध्यद्गि॒रिभ्य॒ आ धा॒रय॑	6	6	7	आ मे॒ हवं॑ नास॒त्याश्वि॑ना॒ गच
6	5	31	पु॒रो॒ळाशं॑ नो॒ अन्ध॑स॒ इन्द्र	6	6	8	गच्छ॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हमि॒त्था स
6	5	32	स म॒न्युं मर्त्या॑ना॒मद॑ब्धो॒	6	6	9	उ॒भा हि द॒स्रा भि॒षजा॑ मयो॒भुव
6	5	33	अ॒यं कृ॒त्नुरगृ॑भीतो विश्व॒जिद	6	6	10	द्यु॒म्नी वां॒ स्तोमो॑ अश्विना
6	5	34	वि॒दद्यत्पू॒र्व्यं॑ न॒ष्टमुदी॑म	6	6	11	तं वो॑ द॒स्ममृ॑ती॒षहं॒ वसो॑र्म
6	5	35	न॒ह्य१॒न्यं ब॒ळाक॑रं मर्डि॒तारं॑	6	6	12	बृ॒हदिन्द्रा॑य गायत॒ मरु॑तो वृ
6	5	36	अवा॑ नो वाज॒युं रथं॑ सु॒करं॑ त	6	6	13	आ नो॒ विश्वा॑सु॒ हव्य॒ इन्द्रः
6	5	37	आ तू न॑ इन्द्र क्षु॒मन्तं॑ चि॒	6	6	14	क॒न्या॒३॒ वार॑वाय॒ती सोम॒मपि॑ स
6	5	38	आ नो॑ भर॒ दक्षि॑णेना॒भि स॒व्ये	6	6	15	पान्त॒मा वो॒ अन्ध॑स॒ इन्द्र॑म॒
6	6	1	आ प्र द्र॑व परा॒वतो॑ऽर्वा॒वत॑श	6	6	16	अ॒स्य पी॒त्वा मदा॑नां दे॒वो दे
6	6	2	इन्द्र॑ श्रु॒धि सु मे॒ हव॑म॒स्	6	6	17	अया॑म॒ धीव॑तो॒ धियोऽर्व॑द्भिः
6	6	3	दे॒वाना॒मिदवो॑ म॒हत्तदा वृ॑णीम	6	6	18	यस्ते॑ नू॒नं श॑तक्रत॒विन्द्र॑
6	6	4	व॒यमि॑द्वः सुदानवः क्षि॒यन्तो॒	6	6	19	त्रिक॑द्रुकेषु॒ चेत॑नं दे॒वासो

ऋग्वेदः संहिता षष्ठम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	6	20	प॒रा॒कात्ता॑च्चिदद्रिव॒स्त्वां	6	6	35	त्वं ह॒ त्यत्स॒प्तभ्यो॒ जाय॑मा
6	6	21	उद्वेद॒भि श्रु॒ताम॑घं वृष॒भं न	6	6	36	या इ॑न्द्र॒ भुज॒ आभ॑र॒ः स्व॑र्
6	6	22	ये सोमा॑सः परा॒वति॒ ये अ॑र्वा॒	6	6	37	स न॒ः सोमे॑षु सोमपाः सु॒तेषु॑
6	6	23	यस्यं॑ ते॒ नू चि॑दा॒दिशं॒ न मि॒	6	6	38	समी॑ रे॒भासो॑ अस्वर॒न्निन्द्र
6	6	24	श्रु॒तं वो॑ वृत्र॒हन्त॑मं॒ प्र	6	7	1	इन्द्रा॑य॒ साम॑ गायत॒ विप्रा॑य
6	6	25	अ॒भी षु ण॒स्त्वं र॒यिं म॑न्दसा	6	7	2	अधा॒ ही॑न्द्र गिर्वण॒ उप॑ त्वा
6	6	26	आ ते॒ दक्षं॒ वि रो॑च॒ना दध॒द्र	6	7	3	त्वामि॒दा ह्यो नरोऽपी॑प्यन्वज्
6	6	27	उप॑ नो॒ हरि॑भिः सु॒तं या॒हि म॑	6	7	4	अ॒यं त॑ एमि त॒न्वा॑ पु॒रस्ता॒द
6	6	28	गौर्ध॑यति म॒रुतां॑ श्रव॒स्युर्	6	7	5	प्र नू॒नं धा॑वता॒ पृथ॒ङ्नेह यो
6	6	29	कद॑त्विषन्त सू॒रय॑स्ति॒र आप॑इव	6	7	6	ऋध॑गि॒त्था स मर्त्यः॑ शश॒मे दे
6	6	30	आ त्वा॒ गिरो॑ र॒थीरि॒वास्थुः॑	6	7	7	ते हि॑न्विरे अ॒रुणं॑ जेन्यं॒ वस
6	6	31	तमु॑ ष्टवाम॒ यं गिर॒ इन्द्र॑मु	6	7	8	बण्म॒हाँ अ॑सि सूर्य॒ बळा॑दित्य
6	6	32	अ॒स्मा उ॒षास॒ आति॑रन्त॒ याम॒मि	6	7	9	त्वम॑ग्ने बृ॒हद्वयो॒ दधा॑सि दे
6	6	33	तमु॑ ष्टवाम॒ य इ॒मा ज॒जान॒ विश	6	7	10	आ स॒वं स॑वि॒तुर्य॑था॒ भग॑स्येव
6	6	34	उ॒क्थवा॑हसे वि॒भ्वे॑ मनी॒षां द	6	7	11	शी॒रं पा॑व॒कशो॑चिषं॒ ज्येष्ठो॒

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	7	12	अग्ने॑ घृ॒तस्य॑ धी॒तिभि॑स्तेपा	6	7	27	तं गोभि॒र्वृष॑णं॒ रसं॒ मदा॑य द
6	7	13	अद॑र्शि गातु॒वित्त॑मो॒ यस्मि॑न	6	7	28	असृ॑ग्र॒मिन्द॑वः प॒था धर्म॑न्न
6	7	14	यो विश्वा॒ दय॑ते॒ वसु॒ होता॑ म	6	7	29	अव्यो॒ वारे॒ परि॑ प्रि॒यो हरि॒
6	7	15	उदि॑ता॒ यो निदि॑ता॒ वेदि॑ता॒ व	6	7	30	ए॒ते सोमा॑ अ॒भि प्रि॒यमिन्द्र॑
6	7	16	स्वादि॑ष्ठया॒ मदि॑ष्ठया॒ पव॑स्	6	7	31	पु॒ना॒नः क॒लशे॒ष्वा वस्त्रा॑ण्
6	7	17	पु॒नाति॑ ते परि॒स्रुतं॒ सोमं॒	6	7	32	परि॑ प्रि॒या दि॒वः क॒विर्वयां॑
6	7	18	पव॑स्व दे॒ववीरति॑ प॒वित्रं॑ सो	6	7	33	अ॒भि वह्नि॒रम॑र्त्यः स॒प्त प॑श
6	7	19	अचि॑क्रद॒द्वृषा॒ हरि॑र्म॒हान्म	6	7	34	प्र स्वा॒नासो॒ रथा॑इ॒वार्व॑न्त
6	7	20	ए॒ष दे॒वो अम॑र्त्यः पर्ण॒वीरि॑	6	7	35	अप॒ द्वारा॑ मती॒नां प्र॒त्ना ऋ
6	7	21	ए॒ष विप्रै॑र॒भिष्टु॑तो॒ऽपो दे॒	6	7	36	उपा॑स्मै गायता नर॒ः पव॑माना॒ये
6	7	22	सना॑ च सोम॒ जेषि॑ च॒ पव॑मान॒ म	6	7	37	नम॒सेदुप॑ सीदत द॒ध्नेद॒भि श्री
6	7	23	तव॒ क्रत्वा॒ तवो॒तिभि॒र्ज्योक्	6	7	38	सोमा॑ असृग्र॒मिन्द॑वः सु॒ता ऋ॒
6	7	24	समि॑द्धो वि॒श्वत॒स्पति॒ः पव॑मा	6	7	39	प्र वाच॒मिन्दु॑रिष्यति समु॒द्र
6	7	25	सु॒शि॒ल्पे बृ॑ह॒ती म॒ही पव॑मान	6	8	1	सोम॑ः पुना॒नो अ॑र्षति स॒हस्र॑ध
6	7	26	म॒न्द्रया॑ सोम॒ धार॑या॒ वृषा॑	6	8	2	अत्या॑ हिया॒ना न हे॒तृभि॒रसृ॑ग

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	8	3	परि॒ प्रासि॑ष्यदत्क॒विः सिन्धो	6	8	18	ए॒ष वा॒जी हि॒तो नृभि॑र्विश्व॒
6	8	4	अति॑ श्रि॒ती ति॑र॒श्चता॑ ग॒व्य	6	8	19	प्रास्य॒ धारा॑ अक्षर॒न्वृष्णः॑
6	8	5	ए॒ष धि॒या या॒त्यण्व्या॒ शूरो॒	6	8	20	प्र धारा॑ अस्य शु॒ष्मिणो॒ वृथा
6	8	6	प्र ते॑ सो॒तार॑ ओ॒ण्यो॒३॒ रसं॒	6	8	21	प्र सोमा॑सः स्वा॒ध्य१॒ः पव॑माना॒
6	8	7	प्र नि॒म्नेने॑व॒ सिन्ध॑वो॒ घ्न	6	8	22	प्र सोमा॑सो म॒दच्यु॑तः॒ श्रव॑से
6	8	8	परि॑ सुवा॒नो गि॑रि॒ष्ठाः प॒वित	6	8	23	प्र सोमा॑सो विप॒श्चितो॒ऽपां न
6	8	9	यत्सो॑म चि॒त्रमु॒क्थ्य॑ दि॒व्	6	8	24	प्र सु॑वा॒नो धार॑या॒ तनेन्दु॑र
6	8	10	प्र क॒विर्दे॒ववी॑त॒येऽव्यो॒ वा	6	8	25	आ नः॑ पवस्व॒ धार॑या॒ पव॑मान र॒
6	8	11	ए॒ते धा॑व॒न्तीन्द॑वः॒ सोमा॒ इन	6	8	26	अस॑र्जि॒ रथ्यो॑ यथा प॒वित्रे॑
6	8	12	ए॒ते सोमा॑स आ॒शवो॒ रथा॑इव॒ प्र	6	8	27	स सु॒तः पी॒तये॒ वृषा॒ सोमः॑ प॒
6	8	13	सोमा॑ असृग्र॒माशवो॒ मधो॒र्मद॑स	6	8	28	ए॒ष उ॒ स्य वृषा॒ रथोऽव्यो॒ वार
6	8	14	प्र सोमा॑सो अधन्वि॒षुः पव॑माना	6	8	29	आ॒शुर॑र्ष बृहन्मते॒ परि॑ प्रि॒
6	8	15	पव॑स्व दक्ष॒साध॑नो दे॒वेभ्यः॑	6	8	30	पु॒ना॒नो अ॑क्रमीद॒भि विश्वा॒ म
6	8	16	तम॑मृक्षन्त वा॒जिन॑मु॒पस्थे॒ अ	6	8	31	प्र ये गावो॒ न भूर्ण॑यस्त्वे॒ष
6	8	17	ए॒ष क॒विर॒भिष्टु॑तः प॒वित्रे॒	6	8	32	ज॒नय॑न्रोच॒ना दि॒वो ज॒नय॑न्न॒प

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
6	8	33	यो अत्य॑इव मृ॒ज्यते॒ गोभि॑र्

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

सप्तम अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता सप्तम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	1	1	प्र ण॑ इन्दो म॒हे तन॑ ऊ॒र्मिं
7	1	2	स प॑वस्व॒ मदा॑य॒ कं नृ॒चक्षा॑
7	1	3	असृ॑ग्रन्दे॒ववी॑त॒येऽत्या॑स॒ः
7	1	4	अ॒या सोमः॑ सुकृ॒त्यया॑ म॒हश्चि
7	1	5	तं त्वा॑ नृ॒म्णानि॒ बिभ्र॑तं स
7	1	6	पव॑स्व वृ॒ष्टिमा सु नो॒ऽपामू॒र
7	1	7	उत्ते॒ शुष्मा॑स ईरते॒ सिन्धो॑र
7	1	8	अध्व॑र्यो॒ अद्रि॑भिः सु॒तं सोम
7	1	9	परि॑ द्यु॒क्षः स॒नद्र॑यि॒र्भर॒
7	1	10	उत्ते॒ शुष्मा॑सो अस्थू॒ रक्षो॑
7	1	11	अ॒स्य प्र॒त्नामनु॒ द्युतं॑ शु॒
7	1	12	यवं॑यवं नो॒ अन्ध॑सा पु॒ष्टंपु॑
7	1	13	परि॒ सोम॑ ऋ॒तं बृ॒हदा॒शुः प॒वि
7	1	14	प्र ते॒ धारा॑ अस॒श्चतो॑ दि॒वो
7	1	15	तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति॒ धारा॑ सु
7	1	16	पव॑स्व गो॒जिदश्व॒जिद्वि॑श्व॒ज
7	1	17	प्र गा॑य॒त्रेण॑ गायत॒ पव॑मान॒ं
7	1	18	अ॒या वी॒ती परि॑ स्रव॒ यस्त॑ इन
7	1	19	स नः॑ पुना॒न आ भ॑र र॒यिं वी॒रव
7	1	20	ए॒ना विश्वा॑न्य॒र्य आ द्यु॒म्न
7	1	21	पव॑मानो अजीजनद्दि॒वश्चि॒त्रं न
7	1	22	संमि॑श्लो अरु॒षो भ॑व सूप॒स्थाभ
7	1	23	म॒हो नो॑ रा॒य आ भ॑र॒ पव॑मान ज॒
7	1	24	ए॒ते अ॑सृग्र॒मिन्द॑वस्ति॒रः प॒
7	1	25	आदी॒मश्वं॒ न हेता॒रोऽशू॑शुभन्न
7	1	26	ए॒ष वृषा॒ वृष॑व्रतः॒ पव॑मानो अ
7	1	27	पव॑मानः सु॒तो नृभि॒ः सोमो॒ वाज
7	1	28	आ नः॒ सोम॑ प॒वित्र॒ आ सृ॒जता॒
7	1	29	त्वं स॑मु॒द्रिया॑ अ॒पो॑ऽग्रि॒य
7	1	30	आ पव॑स्व सह॒स्रिणं॑ र॒यिं सो॑म
7	1	31	सु॒ता अनु॒ स्वमा रजो॒ऽभ्य॑र्षन
7	1	32	पव॑मान वि॒दा र॒यिम॒स्मभ्यं॑ सो
7	1	33	प्र सो॑म॒ मधु॑मत्तमो रा॒ये अ॑र
7	1	34	वृष॑णं धी॒भिर॒प्तुरं॒ सोम॑मृ॒त
7	1	35	पव॑मानास आ॒शवः॑ शु॒भ्रा अ॑सृग्
7	1	36	वृषा॑ सोम द्यु॒माँ अ॑सि॒ वृषा॑
7	1	37	ते विश्वा॑ दा॒शुषे॒ वसु॒ सोमा॑
7	1	38	ऊ॒र्मिर्यस्ते॑ प॒वित्र॒ आ दे॑व
7	1	39	प्र हि॑न्वा॒नास॒ इन्द॒वोऽच्छा॑
7	1	40	अ॒भि वे॒ना अ॑नूष॒तेय॑क्षन्ति॒
7	1	41	उ॒तो स॒हस्र॑भर्णसं॒ वाचं॑ सोम
7	2	1	हि॒न्वन्ति॒ सूर॒मुस्र॑यः॒ स्वस
7	2	2	यद॒द्भिः प॑रिषि॒च्यसे॑ मृ॒ज्यम
7	2	3	तं त्वा॑ ध॒र्तार॑मो॒ण्यो॒३ः॑ पव
7	2	4	राजा॑ मे॒धाभि॑रीयते॒ पव॑मानो म
7	2	5	इषं॑ तो॒काय॑ नो॒ दध॑द॒स्मभ्यं॑
7	2	6	प्र शु॒क्रासो॑ वयो॒जुवो॑ हिन्व
7	2	7	पव॑स्व विश्वचर्षणे॒ऽभि विश्वा॑
7	2	8	तवे॒मे स॒प्त सिन्ध॑वः प्र॒शिषं॑
7	2	9	अच्छा॒ कोशं॑ मधु॒श्चुत॒मसृ॑ग्र
7	2	10	म॒हाँ अ॑सि सोम॒ ज्येष्ठ॑ उ॒ग्र
7	2	11	अग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे व
7	2	12	पव॑मानो र॒थीत॑मः शु॒भ्रेभिः॑ श
7	2	13	त्वं सो॑मासि धार॒युर्म॒न्द्र ओ
7	2	14	आ न॑ इन्दो शत॒ग्विनं॑ र॒यिं गो
7	2	15	अ॒यं सोमः॑ कप॒र्दिने॑ घृ॒तं न
7	2	16	पव॑स्व सोम म॒न्दय॒न्निन्द्रा॑य
7	2	17	यदन्ति॒ यच्च॑ दूर॒के भ॒यं वि॒न
7	2	18	त्रि॒भिष्ट्वं॑ दे॑व सवित॒र्वर्ष
7	2	19	प्र दे॒वमच्छा॒ मधु॑मन्त॒ इन्द॒

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	2	20	म॒न्द्रस्य॑ रू॒पं वि॑विदुर्मनी	7	3	2	ए॒ष प्र कोशे॒ मधु॑माँ अचिक्रद॒	7	3	17	इन्दु॑ः पुना॒नो अति॑ गाहते॒ मृ	7	4	6	प्र सेना॒नीः शूरो॒ अग्रे॒ रथा
7	2	21	इषु॒र्न धन्व॒न् प्रति॑ धीयते म	7	3	3	प्र राजा॒ वाचं॑ ज॒नय॑न्नसिष्यद	7	3	18	प्र रे॒भ ए॒त्यति॒ वार॑म॒व्यय॒ं	7	4	7	ब्र॒ह्मा दे॒वानां॑ पद॒वीः क॑वी
7	2	22	सूर्य॑स्येव र॒श्मयो॑ द्रावयि॒त	7	3	4	अ॒चो॒दसो॑ नो धन्व॒न्त्विन्द॑वः	7	3	19	स॒प्त स्वसा॑रो अ॒भि मा॒तर॒ः शि	7	4	8	त्वया॒ हि न॑ः पि॒तर॑ः सोम॒ पूर
7	2	23	त्रिर॑स्मै स॒प्त धे॒नवो॑ दुदुह	7	3	5	सोम॑स्य॒ धारा॑ पवते नृ॒चक्ष॑स	7	3	20	स भ॒न्दना॒ उदि॑यर्ति प्र॒जाव॑त	7	4	9	स्वा॒यु॒धः सो॒तृभि॑ः पू॒यमा॑नो
7	2	24	स मा॒तरा॒ न ददृ॑शान उ॒स्रियो॒	7	3	6	प्र सोम॑स्य॒ पव॑मानस्यो॒र्मय॒	7	3	21	अस॑र्जि स्क॒म्भो दि॒व उद्य॑तो॒	7	4	10	पव॑स्वेन्दो॒ पव॑मानो॒ महो॑भि॒ः
7	2	25	आ दक्षि॑णा सृज्यते शु॒ष्म्या॒३॒	7	3	7	असा॑वि॒ सोमो॑ अरु॒षो वृषा॒ हरी	7	3	22	प्र तु द्र॑व॒ परि॒ कोशं॒ नि षी	7	4	11	अ॒स्य प्रे॒षा हे॒मना॑ पू॒यमा॑न
7	2	26	श्ये॒नो न योनिं॒ सद॑नं धि॒या क	7	3	8	प॒वित्रं॑ ते॒ वित॑तं ब्रह्मणस्	7	3	23	परि॒ हि ष्मा॑ पुरुहू॒तो जना॑ना	7	4	12	स्तो॒त्रे रा॒ये हरि॑रर्षा पुना
7	2	27	हरिं॑ मृजन्त्यरु॒षो न यु॑ज्यते	7	3	9	पव॑स्व देव॒माद॑नो॒ विच॑र्षणिर॒	7	3	24	अ॒यं सोम॑ इन्द्र॒ तुभ्यं॑ सुन्	7	4	13	अध॒ धार॑या॒ मध्वा॑ पृचा॒नस्ति॒
7	2	28	अं॒शुं दु॑हन्ति स्त॒नय॑न्त॒मक्	7	3	10	इन्द्रा॑य सोम॒ सुषु॑त॒ः परि॑ स	7	3	25	प्रो स्य वह्नि॑ः प॒थ्या॑भिरस्य	7	4	14	जु॒ष्टी न॑ इन्दो सु॒पथा॑ सु॒
7	2	29	स्रक्के॑ द्र॒प्सस्य॒ धम॑त॒ः सम	7	3	11	अत्यं॑ मृजन्ति क॒लशे॒ दश॒ क्षि	7	3	26	प्र हिं॑न्वा॒नो ज॑नि॒ता रोद॑स्य	7	4	15	ए॒वा न॑ इन्दो अ॒भि दे॒ववी॑तिं॒
7	2	30	प्र॒त्नान्माना॒दध्या ये स॒मस्व	7	3	12	प्र त॑ आ॒शव॑ः पवमान धी॒जवो॒ मद	7	4	1	अस॑र्जि॒ वक्वा॒ रथ्ये॒ यथा॒जौ	7	4	16	दे॒वा॒व्यो॑ नः परिषि॒च्यमा॑नाः
7	2	31	शिशु॒र्न जा॒तोऽव॑ चक्रद॒द्वने॒	7	3	13	उ॒भ॒यत॒ः पव॑मानस्य र॒श्मयो॑ ध्	7	4	2	परिं॑ सुवा॒नो हरि॑रं॒शुः प॒वित्	7	4	17	प्र ते॒ धारा॒ मधु॑मतीरसृग्र॒न्
7	2	32	स॒हस्र॑धा॒रेऽव॒ ता अ॑स॒श्चत॑स्	7	3	14	अ॒भि॒क्रन्द॑न् क॒लशं॑ वा॒ज्य॑र	7	4	3	सा॒क॒मुक्षो॑ मर्जयन्त॒ स्वसा॑र	7	4	18	ए॒वा न॑ः सोम परिषि॒च्यमा॑न॒ आ
7	2	33	अ॒भि प्रि॒याणि॑ पवते॒ चनो॑हितो	7	3	15	प्रो अ॑यासी॒दिन्दु॒रिन्द्र॑स्य	7	4	4	अधि॒ यद॑स्मिन्वा॒जिनी॑व॒ शुभ॒ः	7	4	19	म॒हत्तत्सोमो॑ महि॒षश्च॑कारा॒पा
7	3	1	धर्ता॒ दि॒वः प॑वते॒ कृत्व्यो॒	7	3	16	अ॒यं पु॑ना॒न उ॒षसो॒ वि रो॑चयद॒	7	4	5	कनि॑क्रन्ति॒ हरि॒रा सृ॒ज्यमा॑न	7	4	20	ए॒ष स्य ते॑ पवत इन्द्र॒ सोम॑श्

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	4	21	अ॒भी नो॑ अर्ष दि॒व्या वसू॑न्य॒
7	4	22	एष वि॑श्व॒वित्प॑वते मनी॒षी सोम
7	4	23	अ॒भि नो॑ वाज॒सात॑मं र॒यिम॑र्ष
7	4	24	परि॒ त्यं ह॑र्य॒तं हरिं॑ ब॒भ्र
7	4	25	आ ह॑र्य॒ताय॑ धृ॒ष्णवे॒ धनु॑स्त
7	4	26	स पु॑ना॒नो म॒दिन्त॑म॒ः सोम॑श्च
7	4	27	अ॒भी न॑वन्ते अ॒द्रुह॑ः प्रि॒यम
7	4	28	पव॑स्व वाज॒सात॑मः प॒वित्रे॒ धा
7	5	1	पु॒रोजि॑ती वो॒ अन्ध॑सः सु॒ताय॑
7	5	2	स॒हस्र॑धारः पवते समु॒द्रो वा॑च
7	5	3	सु॒ष्वा॒णासो॒ व्यद्रि॑भि॒श्चित
7	5	4	क्रा॒णा शिशु॑र्म॒हीनां॑ हि॒न्व
7	5	5	यमी॒ गर्भ॑मृता॒वृधो॑ दृ॒शे चार
7	5	6	प्र पु॑ना॒नाय॑ वे॒धसे॒ सोमा॑य॒
7	5	7	सखा॑य॒ आ नि षी॑दत पुना॒नाय॒ प्

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	5	8	तं वः॑ सखायो मदा॑य पुना॒नम॒भि
7	5	9	इन्द्र॒मच्छ॑ सु॒ता इ॒मे वृष॑णं
7	5	10	अ॒स्मभ्यं॑ गातु॒वित्त॑मो दे॒वे
7	5	11	धी॒भिर्हि॑न्वन्ति वा॒जिनं॒ वने
7	5	12	परी॒तो षि॑ञ्चता सु॒तं सोमो॒ य
7	5	13	पु॒ना॒नः सोम॒ जागृ॑वि॒रव्यो॒
7	5	14	स मा॑मृजे ति॒रो अण्वा॑नि मे॒ष्
7	5	15	नृभि॑र्येमा॒नो ह॑र्य॒तो वि॑चक्
7	5	16	मृ॒ज्यमा॑नः सुहस्त्य समु॒द्रे
7	5	17	पव॑स्व॒ मधु॑मत्तम॒ इन्द्रा॑य स
7	5	18	य उ॒स्रिया॒ अप्या॑ अ॒न्तरश्म॑न
7	5	19	ए॒तमु॒ त्यं म॑द॒च्युतं॑ स॒हस्र
7	5	20	परि॒ प्र ध॒न्वेन्द्रा॑य सोम स्
7	5	21	तं ते॑ सो॒तारो॒ रसं॒ मदा॑य पु॒
7	5	22	पर्यू॒ षु प्र ध॑न्व॒ वाज॑सातये

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	5	23	त्वे सो॑म प्रथ॒मा वृ॒क्तब॑र्हि
7	5	24	अ॒या रु॒चा हरि॑ण्या पुना॒नो वि
7	5	25	ना॒ना॒नं वा उ॑ नो॒ धियो॒ वि व्
7	5	26	श॒र्य॒णाव॑ति॒ सोम॒मिन्द्र॑ः पि
7	5	27	यत्र॑ ब्र॒ह्मा प॑वमान छन्द॒स्य
7	5	28	य इन्दो॒ः पव॑मान॒स्यानु॒ धामा॒
7	5	29	अग्ने॑ बृ॒हन्नु॒षसा॑मू॒र्ध्वो
7	5	30	पि॒प्री॒हि दे॒वाँ उ॑श॒तो य॑विष
7	5	31	इ॒नो रा॑जन्नर॒तिः समि॑द्धो॒ रौ
7	5	32	प्र ते॑ यक्षि॒ प्र त॑ इयर्मि॒
7	5	33	एक॑ः समु॒द्रो ध॒रुणो॑ रयी॒णाम॒
7	6	1	अ॒यं स यस्य॒ शर्म॒न्नवो॑भिर॒ग्
7	6	2	स्व॒स्ति नो॑ दि॒वो अ॑ग्ने पृथि
7	6	3	प्र के॒तुना॑ बृह॒ता या॑त्य॒ग्न
7	6	4	भुवो॑ य॒ज्ञस्य॒ रज॑सश्च ने॒ता

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	6	5	आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑
7	6	6	ओ चि॒त्सखा॑यं स॒ख्या व॑वृत्यां
7	6	7	को अ॒स्य वे॑द प्रथ॒मस्याह्न॒ः
7	6	8	किं भ्राता॑स॒द्यद॑ना॒थं भवा॑ति
7	6	9	वृषा॒ वृष्णे॑ दुदुहे॒ दोह॑सा द
7	6	10	उदी॑रय पि॒तरा॑ जा॒र आ भग॒मिय॑क
7	6	11	द्यावा॑ ह॒ क्षामा॑ प्रथ॒मे ऋ॒त
7	6	12	दु॒र्मन्त्वत्रा॒मृत॑स्य॒ नाम॒
7	6	13	यु॒जे वां॒ ब्रह्म॑ पू॒र्व्यं न
7	6	14	प॒रे॒यि॒वांसं॑ प्र॒वतो॑ म॒हीरन
7	6	15	अङ्गि॑रसो नः पि॒तरो॒ नव॑ग्वा॒
7	6	16	यौ ते॒ श्वानौ॑ यम रक्षि॒तारौ॑
7	6	17	उदी॑रता॒मव॑र॒ उत्परा॑स॒ उन्म॑ध
7	6	18	आच्या॒ जानु॑ दक्षिण॒तो नि॒षद्य
7	6	19	अग्नि॑ष्वात्ताः पितर॒ एह ग॑च्छ

ऋग्वेदः संहिता सप्तम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	6	20	मैन॑मग्ने॒ वि द॑हो॒ माभि शो॑चो	7	7	7	अध॒ ग्मन्तो॒शना॑ पृच्छते वां॒
7	6	21	यत्ते॑ कृ॒ष्णः श॑कु॒न आ॑तु॒तोद	7	7	8	म॒क्षू ता त॑ इन्द्र दा॒नाप्न॑स
7	6	22	यो अ॒ग्निः क्र॑व्य॒वाह॑नः पि॒त	7	7	9	यजा॑मह॒ इन्द्रं॒ वज्र॑दक्षिणं॒
7	6	23	त्वष्टा॑ दुहि॒त्रे व॑ह॒तुं कृ॒	7	7	10	इन्द्र॒ सोम॑मि॒मं पि॑ब॒ मधु॑मन
7	6	24	प्रप॑थे प॒थाम॑जनिष्ट पू॒षा प्र	7	7	11	भ॒द्रं नो॒ अपि॑ वातय॒ मनो॒ दक्
7	6	25	द्र॒प्सश्च॑स्कन्द प्रथ॒माँ अनु॑	7	7	12	प॒शुं नः॑ सोम रक्षसि पुरु॒त्रा
7	6	26	पर॑ मृत्यो॒ अनु॒ परे॑हि॒ पन्थ	7	7	13	प्र ह्यच्छा॑ मनी॒षाः स्पा॒र्हा
7	6	27	आ रो॑हता॒युर्ज॒रसं॑ वृणा॒ना अ	7	7	14	आ॒धीष॑माणायाः पतिः शु॒चाया॑श
7	6	28	उच्छ्व॑ञ्चस्व पृथिवि॒ मा नि बा	7	7	15	अस॑त्सु मे॑ जरितः॒ साभि॑वे॒गो
7	7	1	नि व॑र्तध्वं॒ मानु॑ गाता॒स्मान	7	7	16	दर्श॒न्न्वत्र॑ शृत॒पाँ अ॑नि॒न्
7	7	2	भ॒द्रं नो॒ अपि॑ वातय॒ मनः॑||	7	7	17	यस्या॑न॒क्षा दु॑हि॒ता जात्वास॒
7	7	3	य॒ज्ञा॒साह॒ं दुव॑ इषे॒ऽग्निं प	7	7	18	द॒शाना॒मेकं॑ कपि॒लं स॑मा॒नं तं
7	7	4	आ॒ग्निं न स्ववृ॑क्तिभि॒र्होता॑र	7	7	19	अ॒यं यो वज्रः॑ पुरु॒धा विवृ॑त्
7	7	5	त्वां य॒ज्ञेष्वी॑ळ॒तेऽग्ने॑ प्	7	7	20	विश्वो॒ ह्य१॒॑न्यो अ॒रिरा॑ज॒गाम॒
7	7	6	कुह॑ श्रु॒त इन्द्रः॒ कस्मि॑न्न	7	7	21	ए॒वा हि मां त॒वसं॑ ज॒ज्ञुरु॒ग्

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	7	22	वने॒ न वा॒ यो न्य॑धायि चा॒कञ्छ	7	8	7	अ॒न॒मी॒वा उ॒षस॒ आ च॑रन्तु न॒ उ
7	7	23	मात्रे॒ नु ते॒ सुमि॑ते इन्द्र	7	8	8	त आ॑दित्या॒ आ ग॑ता स॒र्वता॑तये
7	7	24	प्र दे॑व॒त्रा ब्रह्म॑णे गा॒तुरे	7	8	9	उ॒षासा॒नक्ता॑ बृह॒ती सु॒पेश॑सा
7	7	25	ए॒वेद्यूने॑ यु॒वतयो॑ नमन्त॒ यद	7	8	10	दि॒वि॒स्पृशं॑ य॒ज्ञम॒स्माक॑मश्
7	7	26	हि॒नोता॑ नो अध्व॒रं दे॑वय॒ज्या	7	8	11	म॒हद॒द्य म॑ह॒तामा वृ॑णीमहेऽवो
7	7	27	आ नो॑ दे॒वाना॒मुप॑ वेतु॒ शंसो॒	7	8	12	नमो॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष
7	7	28	अ॒स्येदे॒षा सु॑म॒तिः प॑प्रथा॒न	7	8	13	वि॒श्वाहा॑ त्वा सु॒मन॑सः सु॒चक
7	7	29	प्र सु ग्मन्ता॑ धियसा॒नस्य॑ स॒	7	8	14	अ॒स्मिन्न॑ इन्द्र पृ॒त्सु॒तौ यश
7	7	30	नि॒धीय॑मा॒नमप॑गूळ्हम॒प्सु प्र	7	8	15	यो वां॒ परि॑ज्मा सु॒वृद॑श्विना
7	8	1	प्र मा॑ युयुज्रे प्र॒युजो॒ जना	7	8	16	इ॒यं वा॑म॒ह्वे शृ॑णु॒तं मे॑ अश
7	8	2	यस्य॒ प्रस्वा॑दसो॒ गिर॑ उप॒मश्	7	8	17	न तं राजा॑नावदिते॒ कुत॑श्च॒न न
7	8	3	प्रा॒वे॒पा मा॑ बृह॒तो मा॑दयन्त	7	8	18	रथं॑ यान्तं॒ कुह॒ को ह॑ वां नर
7	8	4	स॒भामे॑ति कित॒वः पृ॒च्छमा॑नो ज	7	8	19	यु॒वं क॒वी ष्ठः पर्य॑श्विना॒
7	8	5	स्त्रियं॑ दृ॒ष्ट्वाय॑ कित॒वं त	7	8	20	न तस्य॑ विद्म तद॒ु षु प्र वो॑
7	8	6	अ॒बु॑ध्रमु॒ त्य इन्द्र॑वन्तो अ॒	7	8	21	स॒मा॒नमु॒ त्यं पु॑रुहू॒तमु॒क्थ

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
7	8	22	अस्ते॑व॒ सु प्र॑त॒रं लाय॒मस्य॒
7	8	23	यस्मि॑न्व॒यं द॑धि॒मा शंस॒मिन्द
7	8	24	अच्छा॑ म॒ इन्द्रं᳚ म॒तयः॑ स्व॒
7	8	25	विशं᳚विशं म॒घवा॒ पर्य᳚शायत॒ जन
7	8	26	आ या॒त्विन्द्रः॒ स्वप॑ति॒र्मदा
7	8	27	पृथ॒क् प्राय॑न् प्रथ॒मा दे॒वहू
7	8	28	दि॒वस्परि॑ प्रथ॒मं ज॑ज्ञे अ॒ग्
7	8	29	उ॒शिक्पा॑व॒को अ॑र॒तिः सु॑मे॒धा

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

ऋग्वेदः संहिता

अष्टम अष्टकम

ऋग्वेदः संहिता अष्टम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	1	1	प्र होता॑ जा॒तो म॒हान्न॑भो॒विन	8	1	16	दू॒रे तन्नाम॒ गुह्यं᳚ परा॒चैर्	8	2	1	ये य॒ज्ञेन॒ दक्षि॑णया॒ सम॑क्ता	8	2	16	स ईं᳚ स॒त्येभि॒ः सखि॑भिः शु॒चद
8	1	2	नि पु॒स्त्या॑सु त्रि॒तः स्त॑भू॒	8	1	17	शाक्म॑ना शा॒को अ॑रु॒णः सु॑प॒र्	8	2	2	ये अ॒ग्नेः परि॑ जज्ञि॒रे विरू॑	8	2	17	उ॒द॒प्रुतो॒ न वयो॒ रक्ष॑माणा॒
8	1	3	ज॒गृ॒भ्मा ते॒ दक्षि॑णमिन्द्र॒	8	1	18	इ॒दं त॒ एकं᳚ प॒र ऊं॒ त॒ एकं᳚ तृ	8	2	3	प॒रा॒वतो॒ ये दिधि॑षन्त॒ आप्यं॒	8	2	18	बृह॒स्पति॒रम॑त॒ हि त्यदा॑सां॒
8	1	4	प्र स॒प्तगु॑मृ॒तधी॑तिं सुमे॒धा	8	1	19	मा प्र गा॑म प॒थो व॒यं मा य॒ज्ञ	8	2	4	को वः॒ स्तोमं᳚ राधति॒ यं जुजो॑	8	2	19	भ॒द्रा अ॒ग्नेर्व॑ध्र्य॒श्वस्य॑
8	1	5	अ॒हं भु॑वं॒ वसु॑नः पू॒र्व्यस्प	8	1	20	यत्ते॑ य॒मं वैव॑स्व॒तं मनो॑ ज॒	8	2	5	विश्वे॑ यजत्रा॒ अधि॑ वोचतो॒तये	8	2	20	दी॒र्घत॑न्तुर्बृ॒हदु॑क्षा॒यम॒ग
8	1	6	अ॒हमे॒ताञ्छाश्व॑सतो॒ द्वाद्वेन	8	1	21	यत्ते॑ अ॒पो यदोष॑धी॒र्मनो॑ ज॒ग	8	2	6	क॒था दे॒वानां᳚ कत॒मस्य॒ याम॑नि	8	2	21	इ॒मां मे॑ अग्ने स॒मिधं᳚ जुषस्व
8	1	7	अ॒हं दां᳚ गृण॒ते पूर्व्यं॒ वस्	8	1	22	प्र ता॒र्यायुः॑ प्रत॒रं नवी॑यः	8	2	7	ते नो॒ अर्व᳚न्तो हवन॒श्रुतो॒ ह	8	2	22	दे॒वी दि॒वो दु॑हि॒तरा॑ सुशि॒ल्
8	1	8	अ॒हं स यो नव॑वास्त्वं बृ॒हद्र॑	8	1	23	असु॑नीते॒ पुन॑र॒स्मासु॒ चक्षुः	8	2	8	र॒ण्वः संदृ॑ष्टौ पितु॒माँइ॑व॒	8	2	23	बृह॑स्पते प्रथ॒मं वा॒चो अग्रं॒
8	1	9	प्र वो॑ म॒हे मन्द॑माना॒यान्ध॒स	8	1	24	आ जनं᳚ त्वे॒षसं᳚दृशं॒ माही॑नान	8	2	9	अ॒ग्निरिन्द्रो॒ वरु॑णो मि॒त्रो	8	2	24	यस्ति॒त्याज॑ सचि॒विदं॒ सखा॑यं॒
8	1	10	म॒हत्तदु॒ल्बं स्थवि॑रं॒ तदा॑सी	8	1	25	अ॒यं मा॒तायं पि॒तायं जी॒वातु॒र	8	2	10	या गौर्व॑र्त॒निं प॒र्येति॑ निष	8	3	1	दे॒वानां॒ नु व॒यं जाना॒ प्र वो
8	1	11	अ॒ग्नेः पूर्वे॒ भ्रात॑रो॒ अर्थ	8	1	26	इ॒दमि॒त्था रौद्रं᳚ गू॒र्तव॑चा॒	8	2	11	ब्रह्म॒ गाम॑श्वं᳚ ज॒नय॑न्त॒ ओष॑	8	3	2	यद्दे॑वा अ॒दः स॑लि॒ले सुसं᳚रब्
8	1	12	विश्वे॑ देवाः शा॒स्तन॑ मा॒ यथे	8	1	27	म॒ध्या यत्कर्त्व॒मभ॑वद॒भीके॒ क	8	2	12	दे॒वान् हु॑वे बृ॒हच्छ्र॑वसः स्	8	3	3	जनि॑ष्ठा उ॒ग्रः सह॑से तु॒राय॑
8	1	13	यमैच्छा॑म॒ मन॑सा॒ सो॒३॒॑यमागा॑द्	8	1	28	म॒क्षू क॒नायाः॑ स॒ख्यं नवी॑यो॒	8	2	13	वृषा॑ य॒ज्ञो वृष॑णः सन्तु य॒ज्	8	3	4	सना॑माना चिद् ध्वसयो॒ न्य॑स्मा
8	1	14	तन्तुं᳚ त॒न्वन्त्रज॑सो भा॒नुमन्व	8	1	29	अ॒यं स्तु॒तो राजा॑ वन्दि वे॒धा	8	2	14	स॒मु॒द्रः सिन्धू॒ रजो॑ अ॒न्तरि	8	3	5	वसू॑नां वा चर्कृष॒ इय॑क्षन्धि॒
8	1	15	तां सु ते॑ की॒र्तिं म॑घवन्महि॒	8	1	30	अधा॒ गाव॒ उप॑मातिं क॒नाया॒ अनु	8	2	15	इ॒मां धियं᳚ स॒प्तशी॑र्ष्णीं पि	8	3	6	प्र सु व॑ आपो महि॒मान॑मुत्त॒मं

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	3	7	तृ॒ष्टाम॑या प्रथ॒मं यात॑वे स॒ज
8	3	8	आ वं॑ ऋञ्जस ऊ॒र्जां व्युं॑ष्टि॒ष
8	3	9	भु॒रन्तुं॑ नो य॒शस॒ः सोत्वन्धं॑स
8	3	10	अ॒भ्र॒प्रुषो॒ न वा॒चा प्रुं॑षा॒
8	3	11	प्र यद्वहं॑ध्वे मरुतः परा॒काद्य
8	3	12	विप्रा॑सो॒ न मन्मं॑भिः स्वा॒ध्य
8	3	13	ग्रावा॑णो॒ न सू॒रय॒ः सिन्धुं॑मा
8	3	14	अपं॑श्यमस्य मह॒तो मं॑हि॒त्वमर्मं॑र्
8	3	15	अ॒ग्निः सप्तिं॑ वाजंभ॒रं दं॑दात
8	3	16	य इ॒मा विश्वा॒ भुवं॑नानि॒ जुह्व
8	3	17	चक्षुं॑षः पि॒ता मनं॑सा॒ हि धीरो॑
8	3	18	यस्तें॑ म॒न्योऽविं॑धद्वज्र सायक॒
8	3	19	त्वया॑ मन्यो स॒रथं॑मारु॒जन्तो॒
8	3	20	स॒त्येनोत्तं॑भिता॒ भूमि॒ः सूर्य
8	3	21	रैभ्यां॑सीदनु॒देयी॑ नाराशं॒सी न

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	3	22	ऋ॒क्सा॒माभ्यां॑म॒भिहिं॑तौ॒ गावौ॑
8	3	23	द्वे तें॑ च॒क्रे सूं॑र्ये ब्र॒ह्
8	3	24	उदी॒र्ष्वात॒ः पतिं॑वती॒ ह्ये॒३॑ष
8	3	25	पूषा त्वे॒तो नं॑यतु हस्त॒गृह्य
8	3	26	ये व॒ध्वं॑श्च॒न्द्रं वं॑ह॒तुं यक
8	3	27	गृ॒भ्णामिं॑ ते सौभग॒त्वाय॒ हस्त
8	3	28	सोमो॑ ददद्गन्ध॒र्वायं॑ गन्ध॒र्व
8	4	1	वि हि सोतो॒रसृं॑क्षत॒ नेन्द्रं॑
8	4	2	न मत्स्त्री सुं॑भ॒सत्तं॑रा॒ न सु
8	4	3	इ॒न्द्रा॒णीमा॒सु नारिं॑षु सु॒भग
8	4	4	न सेशे॒ यस्य॒ रम्बं॑तेऽन्त॒रा स
8	4	5	र॒क्षो॒हणं॑ वा॒जिन॒मा जिं॑घर्मि
8	4	6	यत्रे॒दानीं॒ पश्यं॑सि जातवेद॒स्
8	4	7	त्रिर्या॑तु॒धान॒ः प्रसिं॑तिं त
8	4	8	यः पौरुं॑षेयेण क्र॒विषां॑ सम॒ङ्क्

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	4	9	प॒श्चात्पु॒रस्तां॑दध॒रादु॒दं॑क्ता
8	4	10	ह॒विष्पान्तं॑म॒जरं॑ स्व॒र्विदिं॑
8	4	11	मू॒र्धा भु॒वो भं॑वति॒ नक्तं॑म॒ग्
8	4	12	य॒देदें॑न॒मदं॑धुर्य॒ज्ञियां॑सो दि
8	4	13	द्वे सं॑मी॒ची बिं॑भृत॒श्चरं॑न्तं
8	4	14	इन्द्रं॑ स्तवा॒ नृतं॑मं॒ यस्यं॑
8	4	15	न यस्य॒ द्यावां॑पृथि॒वी न धन्व॒
8	4	16	प्राक्तुभ्य॒ इन्द्र॒ः प्र वृ॒ध
8	4	17	स॒हस्रं॑शीर्षा॒ पुं॑रुषः सहस्रा॒
8	4	18	यत्पुरुं॑षेण ह॒विषां॑ दे॒वा य॒ज्
8	4	19	यत्पुरुं॑षं॒ व्यदं॑धुः कति॒धा व्
8	4	20	सं जां॑गृ॒वद्भि॒र्जरं॑माण इध्यते
8	4	21	तमोषं॑धीर्दधिरे॒ गर्भं॑मृ॒त्वियं॑
8	4	22	यस्तुभ्यं॑मग्ने अ॒मृतां॑य॒ मर्त्
8	4	23	य॒ज्ञस्यं॑ वो र॒थ्यं॑ वि॒श्पतिं॑

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	4	24	क्रा॒णा रु॒द्रा म॒रुतो॑ वि॒श्व
8	4	25	ते हि द्यावां॑पृथि॒वी भूरिं॑रेतस
8	4	26	महिं॑ द्यावापृथिवी भूतमु॒र्वी न
8	4	27	उ॒त नो॑ दे॒वाव॒श्विना॑ शु॒भस्प
8	4	28	ए॒तं शंसं॑मिन्द्रास्म॒युष्ट्वं
8	4	29	प्रैते वं॑दन्तु॒ प्र व॒यं वं॑दाम
8	4	30	उ॒ग्राइं॑व प्र॒वहं॑न्तः स॒मायं॑मु
8	4	31	तृ॒दि॒ला अतृं॑दिलासो॒ अद्रं॑योऽश
8	5	1	ह॒ये जाये॒ मनं॑सा॒ तिष्ठं॑ घोरे॒
8	5	2	या सुं॑जू॒र्णिः श्रेणिं॑ः सु॒म्न
8	5	3	ज॒ज्ञि॒ष इ॒त्था गो॒पीथ्यां॑य॒ ह
8	5	4	यद्वि॒रूपाचं॑रं॒ मर्त्ये॒ष्ववं॑स
8	5	5	प्र तें॑ म॒हे वि॒दथें॑ शंसिषं॒ ह
8	5	6	ता व॒ज्रिणं॑ म॒न्दिनं॒ स्तोम्य
8	5	7	आ रोदं॑सी॒ हर्यं॑माणो महि॒त्वा न

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description	अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	5	8	या ओष॑धीः॒ पूर्वा॑ जा॒ता दे॒वे	8	5	23	अ॒भि गो॒त्राणि॒ सह॑सा॒ गाह॑मान	8	6	11	वज्रे॑ण॒ हि वृ॑त्र॒हा वृ॒त्रमस	8	6	26	इति॒ वा इति॑ मे॒ मनो॒ गामश्व॑ं
8	5	9	यत्रौष॑धीः स॒मग्म॑त॒ राजा॑नः॒	8	5	24	असा॑वि॒ सोम॑ः पुरुहू॒त तुभ्य॒ं	8	6	12	इन्द्र॒ पिब॑ प्रतिका॒मं सु॒तस्	8	6	27	न॒हि मे॒ रोद॑सी उ॒भे अ॒न्यं प॒
8	5	10	यदि॒मा वा॒जय॑न्न॒हमोष॑धी॒र्हस्	8	5	25	उप॒ ब्रह्मा॑णि हरिवो॒ हरि॑भ्या	8	6	13	इ॒दं ते॒ पात्र॒ं सन॑वित्तमिन्द	8	7	1	तदिदा॑स॒ भुव॑नेषु॒ ज्येष्ठ॒ं य
8	5	11	मु॒ञ्चन्तु॑ मा शप॒थ्या॒३॒॑दथो॑ व	8	5	26	क॒दा व॑सो स्तो॒त्रं हर्य॑त॒ आव	8	6	14	तम॑स्य॒ द्यावा॑पृथि॒वी सचे॑तसा	8	7	2	स्तु॒षेय्य॑ं पुरु॒वर्प॑स॒मृभ्व
8	5	12	बृह॑स्पते॒ प्रति॑ मे दे॒वता॑मि	8	5	27	प्रास्तौ॑दृ॒ष्वौजा॑ ऋ॒ष्वेभि॑स	8	6	15	इन्द्र॒स्यात्र॒ तवि॑षीभ्यो विर	8	7	3	हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे
8	5	13	यद्दे॒वापि॒ः शंत॑नवे पु॒रोहि॑त	8	6	1	उ॒भा उ॑ नू॒नं तदिद॑र्थयेथे॒ वि	8	6	16	घ॒र्मा सम॑न्ता त्रि॒वृत॒ं व्या	8	7	4	यं क्रन्द॑सी॒ अव॑सा तस्तभा॒ने
8	5	14	कं न॑श्चि॒त्रमि॑षण्यसि चिकि॒त्	8	6	2	सृ॒ण्येव॑ ज॒र्भरी॑ तु॒र्फरी॑तू	8	6	17	ष॒ड्त्रिं॒शाँश्च॑ च॒तुर॑ः क॒ल्	8	7	5	वसु॑ न चि॒त्रम॑हसं गृणीषे वा॒
8	5	15	स द्रु॒ह्व॑णे॒ मनु॑ष ऊर्ध्वसा॒न	8	6	3	आ॒विर॑भू॒न्महि॒ माघो॑नमेषा॒ं व	8	6	18	चि॒त्र इ॑च्छि॒शोस्तरु॑णस्य व॒क्	8	7	6	इष॑ं दु॒हन्त्सु॒दुघा॑ं वि॒श्वध
8	5	16	इन्द्र॒ दृह्य॑ मघव॒न्त्वाव॒दिद	8	6	4	तमे॒व ऋषि॒ं तमु॑ ब्र॒ह्माण॑माह	8	6	19	वा॒जिन्त॑माय॒ सह्य॑से सुपित्र्	8	7	7	अ॒यं वे॒नश्चो॑दय॒त्पृश्नि॑गर्भ
8	5	17	न वो॒ गुहा॑ चकृम॒ भूरि॑ दुष्कृ	8	6	5	किमि॒च्छन्ती॑ स॒रमा॒ प्रेदमा॑न	8	6	20	पिबा॒ सोम॑ं मह॒त इ॑न्द्रि॒याय॒	8	7	8	नाके॑ सुप॒र्णमुप॒ यत्पत॑न्तं ह
8	5	18	उद्बु॑ध्यध्व॒ं सम॑नसः सखायः॒ स	8	6	6	अ॒से॒न्या वः॑ पणयो॒ वचां॑स्यनि	8	6	21	व्य१॒॑र्य इ॑न्द्र तनुहि॒ श्रवा॒ं	8	7	9	इ॒मं नो॑ अग्न॒ उप॑ य॒ज्ञमेहि॒
8	5	19	प्री॒णी॒ताश्वा॑न् हि॒तं ज॑याथ	8	6	7	ते॑ऽवदन्प्रथ॒मा ब्र॑ह्मकिल्बि॒	8	6	22	न वा उ॑ दे॒वाः क्षुध॒मिद्व॒धं	8	7	10	इ॒दं स्व॑रि॒दमिदा॑स वा॒मम॒यं प
8	5	20	प्र ते॒ रथ॑ं मिथू॒कृत॒मिन्द्रो	8	6	8	समि॑द्धो अ॒द्य मनु॑षो दुरो॒णे	8	6	23	मोघ॒मन्न॑ं विन्दते॒ अप्र॑चेताः	8	7	11	अ॒हं रु॒द्रेभि॒र्वसु॑भिश्चराम्
8	5	21	उ॒त प्र॒धिमुद॑हन्नस्य वि॒द्वान	8	6	9	आ सु॒ष्वय॑न्ती यज॒ते उपा॑के उ॒	8	6	24	अग्ने॒ हंसि॒ न्य१॒॑त्रिण॒ं दीद्य	8	7	12	अ॒हं रु॒द्राय॒ धनु॒रा त॑नोमि ब
8	5	22	आ॒शुः शिशा॑नो वृष॒भो न भी॒मो घ	8	6	10	मनी॑षिणः॒ प्र भ॑रध्वं मनी॒षां	8	6	25	तं म॑र्ता॒ अम॑र्त्यं घृ॒तेना॒ग	8	7	13	न तमंहो॒ न दु॑रि॒तं देवा॑सो अष

ऋग्वेदः संहिता अष्टम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	7	14	रात्री॒ व्य॑ख्यदाय॒ती पु॑रु॒त्
8	7	15	ममा॑ग्ने॒ वर्चो॑ विह॒वेष्व॑स्त
8	7	16	अग्ने॑ म॒न्युं प्र॑तिनु॒दन् पर
8	7	17	नास॑दासी॒न्नो सदा॑सीत्त॒दानीं॑
8	7	18	यो य॒ज्ञो वि॒श्वत॒स्तन्तु॑भिस्
8	7	19	अप॒ प्राच॑ इन्द्र॒ विश्वाँ॑ अ॒
8	7	20	ई॒जा॒नमिद् द्यौर्गू॒र्ताव॑सुरी
8	7	21	प्रो ष्व॑स्मै पुरोर॒थमिन्द्रा॑
8	7	22	उ॒भे यदि॑न्द्र॒ रोद॑सी आप॒प्रा
8	7	23	यस्मि॑न्वृ॒क्षे सु॑पला॒शे दे॒व
8	7	24	के॒श्य१॒॑ग्निं के॒शी वि॒षं के॒शी
8	7	25	उ॒त दे॑वा॒ अव॑हितं॒ देवा॒ उन्न

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	7	26	तव॒ त्य इ॑न्द्र स॒ख्येषु॒ वह्न
8	7	27	सूर्य॑रश्मि॒र्हरि॑केशः पु॒रस्त
8	7	28	अग्ने॒ तव॒ श्रवो॒ वयो॒ महि॑ भ्
8	7	29	अग्ने॒ अच्छा॑ वदे॒ह न॑ः प्र॒त्
8	7	30	अ॒यम॑ग्ने जरि॒ता त्वे अ॑भूदपि
8	8	1	त्यं चि॒दत्रि॑मृत॒जुर॒मर्थ॒मश्
8	8	2	अ॒यं हि ते॒ अम॑र्त्य॒ इन्दु॒रत
8	8	3	इ॒मां ख॑ना॒म्योष॑धिं वी॒रुधं॒
8	8	4	अर॑ण्या॒न्यर॑ण्यान्य॒सौ या प्र
8	8	5	श्रत्ते॑ दधामि प्रथ॒माय॑ म॒न्य
8	8	6	सु॒ष्वा॒णास॑ इन्द्र स्तु॒मसि॑
8	8	7	स॒वि॒ता य॒न्त्रैः पृ॑थि॒वीम॑रम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	8	8	समि॑द्धश्चि॒त्समि॑ध्यसे दे॒वेभ
8	8	9	श्र॒द्धया॒ग्निः समि॑ध्यते श्र॒
8	8	10	शा॒स इ॒त्था म॒हाँ अ॑स्यमित्रखा
8	8	11	ई॒ङ्खय॑न्तीरप॒स्युव॒ इन्द्रं॑
8	8	12	सोम॒ एके॑भ्यः पवते घृ॒तमेक॒ उप
8	8	13	अरा॑यि॒ काणे॒ विक॑टे गि॒रिं ग॑
8	8	14	अ॒ग्निं हि॑न्वन्तु नो॒ धिय॒ः स
8	8	15	इ॒मा नु कं॒ भुव॑ना सीषधा॒मेन्द
8	8	16	सूर्यो॑ नो दि॒वस्पा॑तु॒ वातो॑
8	8	17	उद॒सौ सूर्यो॑ अगा॒दु॒दयं॑ मा॑म॒
8	8	18	ती॒व्रस्या॒भिव॑यसो अ॒स्य पा॑हि
8	8	19	मु॒ञ्चामि॑ त्वा ह॒विषा॒ जीव॑ना

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	8	20	ब्रह्म॑णा॒ग्निः सं॑विदा॒नो र॑क
8	8	21	अ॒क्षीभ्यां॑ ते॒ नासि॑काभ्यां॒
8	8	22	अपे॑हि मनसस्प॒तेऽप॑ क्राम प॒रश
8	8	23	देवा॑ः क॒पोत॑ इषि॒तो यदि॒च्छन्
8	8	24	ऋ॒ष॒भं मा॑ समा॒नानां॑ स॒पत्ना॑
8	8	25	तु॒भ्ये॒दमि॑न्द्र॒ परि॑ षिच्यते
8	8	26	वात॑स्य॒ नु म॑हि॒मानं॒ रथ॑स्य
8	8	27	म॒यो॒भूर्वातो॑ अ॒भि वा॑तू॒स्रा
8	8	28	वि॒भ्राड् बृ॒हत्पि॑बतु सो॒म्यं
8	8	29	त्वं त्यमि॒टतो॒ रथ॒मिन्द्र॒ प्
8	8	30	आ या॑हि॒ वन॑सा स॒ह गाव॑ः सचन्त
8	8	31	आ त्वा॑हार्षम॒न्तरे॑धि ध्रु॒वस

ऋग्वेदः संहिता अष्टम अष्टकम

अष्ट..	अध्य	वर्गः	Description
8	8	32	अ॒भी॒व॒र्तेन॑ ह॒विषा॒ येनेन्द्
8	8	33	प्र वो॑ ग्रावाणः सवि॒ता दे॒वः
8	8	34	प्र सू॒नव॑ ऋभू॒णां बृ॒हन्न॑वन्
8	8	35	प॒त॒ङ्गम॒क्तमसु॑रस्य मा॒यया॑ ह
8	8	36	त्यमू॒ षु वा॒जिनं॑ दे॒वजू॑तं स
8	8	37	उत्तिं॑ष्ठ॒ताव॑ पश्य॒तेन्द्रं॑स्
8	8	38	प्र सं॑साहिषे पुरुहूत॒ शत्रू॒ञ्
8	8	39	प्रथं॑श्च॒ यस्यं॑ स॒प्रथं॑श्च॒ ना
8	8	40	बृह॒स्पतिं॑र्नयतु दु॒र्गहा॑ ति॒
8	8	41	अपं॑श्यं त्वा॒ मनं॑सा॒ चेकिं॑तानं
8	8	42	विष्णु॒र्योनिं॑ कल्पयतु॒ त्वष्
8	8	43	महिं॑ त्री॒णामवो॑ऽस्तु द्यु॒क्ष
8	8	44	वात॒ आ वा॑तु भेष॒जं शं॒भु मं॑यो
8	8	45	प्राग्नये॒ वाचं॑मीरय वृष॒भायं॑ क
8	8	46	प्र नू॒नं जा॒तवे॑दस॒मश्वं॑ हिन
8	8	47	आयं गौः पृश्नि॑रक्रमी॒दसं॑दन्मा
8	8	48	ऋ॒तं चं॑ स॒त्यं चा॒भी॑द्धा॒त्तप
8	8	49	संस॒मिद्यु॑वसे वृष॒न्नग्ने॒ वि

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।